CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2015 with Solution PDF-Set 2/2/3

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

1. भारत प्राचीनतम संस्कृति का देश है । यहाँ दान पुण्य को जीवनमुक्ति का अनिवार्य अंग माना गया है । जब दान देने को धार्मिक कृत्य मान लिया गया तो निश्चित तौर पर दान लेने वाले भी होंगे । हमारे समाज में भिक्षावृत्ति की ज़िम्मेदारी समाज के धर्मात्मा, दयालु व सज्जन लोगों की है ।

भारतीय समाज में दान लेना व दान देना – दोनों धर्म के अंग माने गए हैं । कुछ भिखारी खानदानी होते हैं क्योंकि पुश्तों से उनके पूर्वज धर्म स्थानों पर अपना अड्डा जमाए हुए हैं । कुछ भिखारी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के हैं जो देश में छोटी-सी विपत्ति आ जाने पर भीख का कटोरा लेकर भ्रमण के लिए निकल जाते हैं । इसके अलावा अनेक श्रेणी के और भी भिखारी होते हैं ।

कुछ भिखारी परिस्थिति से बनते हैं तो कुछ बना दिए जाते हैं । कुछ शौकिया भी इस व्यवसाय में आ गए हैं । जन्मजात भिखारी अपने स्थान निश्चित रखते हैं । कुछ भिखारी अपनी आमदनी वाली जगह दूसरे भिखारी को किराए पर देते हैं । आधुनिकता के कारण अनेक वृद्ध मज़बूरीवश भिखारी बनते हैं । ग़रीबी के कारण बेसहारा लोग भीख माँगने लगते हैं । काम न मिलना भी भिक्षावृत्ति को जन्म देता है । कुछ अपराधी बच्चों को उठा ले जाते हैं तथा उनसे भीख मँगवाते हैं । वे इतने हैवान हैं कि भीख माँगने के लिए बच्चों का अंग-भंग भी कर देते हैं ।

भारत में भिक्षा का इतिहास बहुत पुराना है । देवराज इन्द्र व विष्णु श्रेष्ठ भिक्षुकों में थे । इन्द्र ने कर्ण से अर्जुन की रक्षा के लिए उनके कवच व कुण्डल ही भीख में माँग लिए । विष्णु ने वामन अवतार लेकर भीख माँगी । धर्मशास्त्रों ने दान की महिमा का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जिसके कारण भिक्षावृत्ति को भी धार्मिक मान्यता मिल गई । पूजा-स्थल, तीर्थ, रेलवे स्टेशन, बस-स्टैण्ड, गली-मुहल्ले-आदि हर जगह भिखारी दिखाई देते हैं । इस कार्य में हर आयु का व्यक्ति शामिल है । साल-दो साल के दुध मुँहे बच्चे से लेकर अस्सी-नब्बे वर्ष के बूढ़े तक को भीख माँगते देखा जा सकता है ।

भीख माँगना भी एक कला है, जो अभ्यास या सूक्ष्म निरीक्षण से सीखी जा सकती है । अपराधी बाकायदा इस काम की ट्रेनिंग देते हैं । भीख रोकर, गाकर, आँखें दिखाकर या हँसकर भी माँगी जाती है । भीख माँगने के लिए इतना आवश्यक है कि दाता के मन में करुणा जगे । अपंगता, कुरूपता, अशक्तता, वृद्धावस्था आदि देखकर दाता करुणामय होकर परंपरानिर्वाह कर पुण्य प्राप्त करता है । [15 अंक]

1(क). गद्यांश का समुचित शीर्षक दीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक में गद्यांश का मुख्य विषय और उसका व्यापक आशय आना चाहिए।
- गद्यांश में भिक्षावृत्ति के कारण, रूप तथा उसे बनाए रखने वाली धार्मिक मान्यताओं की चर्चा है।

चरण 1: केंद्रीय विषय पहचानिए लेखक प्राचीन दान-परंपरा से आरंभ करके भिखारियों के प्रकार, उनकी विवशताओं और भीख माँगने के तरीकों का वर्णन करता है। इसलिए मुख्य विषय केवल दान या गरीबी नहीं, भिक्षावृत्ति की सामाजिक समस्या है।

चरण 2: उपयुक्त शीर्षक चुनिए शीर्षक संक्षिप्त होते हुए पूरे गद्यांश का प्रतिनिधित्व करे। "भिक्षावृत्ति : कारण और स्वरूप में इस प्रथा को बढ़ाने वाले कारण तथा उसके विविध रूप दोनों समाहित हो जाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष समुचित शीर्षक है : "भिक्षावृत्ति : कारण और स्वरूप।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय अंतिम अनुच्छेद तक का आशय देखें; केवल दान-पुण्य जैसा किसी एक पहलू का नाम न लिखें।

1(ख). "भारत में भिक्षा का इतिहास प्राचीन है" — सप्रमाण सिद्ध कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रमाण उत्तर में कथन के समर्थन में गद्यांश के स्पष्ट उदाहरण देने होते हैं।
- यहाँ प्राचीनता का प्रमाण पौराणिक प्रसंगों और दान की धार्मिक प्रतिष्ठा से मिलता है।

चरण 1: पौराणिक प्रमाण प्रस्तुत कीजिए गद्यांश में देवराज इन्द्र और विष्णु को श्रेष्ठ भिक्षुक कहा गया है। इन्द्र ने अर्जुन की रक्षा के लिए कर्ण से उनके कवच और कुण्डल भीख में माँगे थे। यह प्रसंग बताता है कि भिक्षा की परंपरा का संबंध प्राचीन पौराणिक कथाओं से जोड़ा

गया है।

चरण 2: दूसरा प्रमाण और परंपरा बताइए विष्णु ने वामन अवतार लेकर भीख माँगी थी। इसके साथ धर्मशास्त्रों में दान की महिमा का वर्णन किया गया है, जिससे भिक्षा को धार्मिक मान्यता मिली। ये प्रसंग गद्यांश के कथन के प्रमाण हैं; इनके लिए किसी आधुनिक घटना या बाहर की ऐतिहासिक तिथि की आवश्यकता नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष इन्द्र का कर्ण से कवच-कुण्डल माँगना, विष्णु का वामन रूप में भिक्षा माँगना और धर्मशास्त्रों में दान की महिमा भारत में भिक्षा की प्राचीन परंपरा के प्रमाण हैं।

त्वरित सुझाव: "सप्रमाण के उत्तर में इन्द्र-कर्ण और विष्णु-वामन, दोनों प्रसंग स्पष्ट लिखें और उन्हें प्राचीन परंपरा से जोड़ें।

1(ग). "भीख माँगना एक कला है" — इस कला के विविध रूपों का उल्लेख कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यहाँ "कला का आशय दाता को प्रभावित करने के सीखे हुए ढंग से है।
- गद्यांश के अनुसार भीख माँगने की कला अभ्यास या सूक्ष्म निरीक्षण से सीखी जा सकती है।

चरण 1: भीख माँगने के रूप गिनाइए गद्यांश में बताया गया है कि भीख रोकर, गाकर, आँखें दिखाकर अथवा हँसकर माँगी जाती है। रोना दयनीयता दिखाता है, जबकि अन्य ढंग भी दाता का ध्यान खींचने और उसे कुछ देने के लिए प्रेरित करने के साधन बनते हैं। उत्तर में इन चारों रूपों का उल्लेख आवश्यक है।

चरण 2: सीखने की प्रक्रिया और उद्देश्य जोड़िए लेखक कहता है कि यह कला अभ्यास और बारीक निरीक्षण से आती है। अपराधी बाकायदा इसकी ट्रेनिंग भी देते हैं। अलग-अलग हावभाव अपनाने का उद्देश्य दाता के मन को प्रभावित करना है; विशेषत: करुणा जगाकर भिक्षा प्राप्त करना इस कला की सफलता मानी गई है।

चरण 3: निष्कर्ष भीख माँगने की कला के रूप हैं : रोना, गाना, आँखें दिखाना और हँसना। इन्हें अभ्यास, निरीक्षण और प्रशिक्षण से सीखकर दाता को प्रभावित किया जाता है।

त्वरित सुझाव: कला के "रूप पूछे जाने पर रोकर, गाकर, आँखें दिखाकर और हँसकर, ये चार क्रियाएँ अवश्य लिखें।

1(घ). समाज में भिक्षावृत्ति बढ़ाने में हमारी मान्यताएँ किस प्रकार सहायक होती हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न धार्मिक मान्यता और सामाजिक व्यवहार के संबंध की पहचान कराता है।
- गद्यांश में दान देने और लेने, दोनों को धर्म का अंग मानने की प्रवृत्ति पर प्रश्न उठाया गया है।

चरण 1: दान और पुण्य की मान्यता स्पष्ट कीजिए हमारी मान्यता है कि दान-पुण्य जीवनमुक्ति का अनिवार्य अंग है। दान को धार्मिक कृत्य मान लेने पर दान ग्रहण करने वालों की उपस्थिति भी स्वाभाविक मान ली जाती है। इस प्रकार दाता के धार्मिक विश्वास से भिक्षा लेने की प्रथा को निरंतर सहारा मिलता है।

चरण 2: धार्मिक स्वीकृति का प्रभाव बताइए धर्मशास्त्रों में दान की महिमा का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन होने से भिक्षावृत्ति को धार्मिक मान्यता मिल जाती है। दयालु लोग भिखारी की दशा देखकर करुणावश दान देते हैं और परंपरा निभाकर पुण्य पाने का संतोष अनुभव करते हैं। यह नियमित दान भिक्षावृत्ति को बनाए रखने और बढ़ाने में सहायक होता है।

चरण 3: निष्कर्ष दान को मुक्ति और पुण्य का साधन तथा दान लेने को भी धर्म का अंग मानना भिक्षावृत्ति को धार्मिक स्वीकृति देता है।

इसी विश्वास से किया जाने वाला नियमित दान इसे बढ़ाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में मान्यता से व्यवहार तक की कड़ी लिखें : पुण्य का विश्वास, दान देना और भिक्षावृत्ति को बढ़ावा मिलना।

1(ङ). भिखारी व्यवसाय के विभिन्न स्वरूपों का उल्लेख कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में भिखारियों के स्वरूप उनके पेशे, परिस्थितियों और परंपरा के आधार पर बताए गए हैं।
- उत्तर में स्वेच्छा से भीख माँगने वालों और विवश अथवा बाध्य किए गए लोगों को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: पारंपरिक और व्यवसायगत रूप बताइए कुछ भिखारी खानदानी हैं, जिनके पूर्वज पीढ़ियों से धर्मस्थलों पर जमे रहे हैं। कुछ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर छोटी विपत्ति के समय भी सहायता माँगने निकल पड़ते हैं। कुछ शौकिया इस व्यवसाय में आते हैं। जन्मजात भिखारी अपने स्थान निश्चित रखते हैं और कुछ अपनी कमाई वाली जगह दूसरे भिखारियों को किराए पर देते हैं।

चरण 2: विवश और बाध्य किए गए रूप बताइए कुछ लोग परिस्थितियों के कारण भिखारी बनते हैं। वृद्धावस्था की मजबूरी, गरीबी, बेसहारापन और काम न मिलना लोगों को भीख की ओर ले जाते हैं। दूसरी ओर, अपराधी बच्चों का अपहरण करके उनसे भीख मँगवाते हैं और कभी उनका अंग-भंग तक करते हैं। इस तरह यह व्यवसाय स्वैच्छिक, विवशताजन्य और अपराधियों द्वारा संचालित रूपों में दिखता है।

चरण 3: निष्कर्ष भिखारी व्यवसाय में खानदानी, जन्मजात, शौकिया, अंतर्राष्ट्रीय, स्थान किराए पर देने वाले, परिस्थितिवश बने और अपराधियों द्वारा बाध्य किए गए भिखारी शामिल हैं।

त्वरित सुझाव: विभिन्न स्वरूप लिखते समय खानदानी और शौकिया के साथ गरीबी-बेरोजगारी से विवश तथा अपहृत बच्चों की स्थिति भी जोड़ें।

1(च). भिखारी दाता के मन में किस भाव को जगाते हैं और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न भीख माँगने वाले की युक्ति और दाता की मनःस्थिति का संबंध पूछता है।
- गद्यांश में निर्णायक भाव "करुणा है, जो दान देने के व्यवहार को प्रेरित करता है।

चरण 1: जगाया जाने वाला भाव पहचानिए भिखारी दाता के मन में करुणा अथवा दया का भाव जगाते हैं। गद्यांश में स्पष्ट कहा गया है कि भीख माँगने के लिए दाता के मन में करुणा जगना आवश्यक है। रोना या दयनीय दशा दिखाना इसी भाव को उभारने का उपाय बनता है। अतः यहाँ केवल ध्यान आकर्षित करना लिखना अधूरा होगा।

चरण 2: उस भाव का उद्देश्य समझाइए अपंगता, कुरूपता, अशक्तता और वृद्धावस्था देखकर दाता करुणामय हो जाता है। वह पीड़ित की सहायता के लिए कुछ देने को प्रेरित होता है। साथ ही दान की परंपरा निभाने और पुण्य प्राप्त करने की उसकी मान्यता भी सक्रिय होती है। भिखारी इस करुणा को जगाते हैं ताकि दाता उन्हें भिक्षा दे।

चरण 3: निष्कर्ष भिखारी दाता में करुणा या दया जगाते हैं ताकि वह उनकी दयनीय दशा से प्रभावित होकर, परंपरा निभाने और पुण्य पाने की भावना से भिक्षा दे।

त्वरित सुझाव: "कौन-सा भाव और क्यों में दोनों उत्तर दें : करुणा, तथा उसके कारण दाता का भिक्षा देने के लिए प्रेरित होना।

1(छ). आपके विचार से भिक्षावृत्ति से कैसे छुटकारा पाया जा सकता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस विचारपरक उत्तर के उपाय गद्यांश में बताए गए कारणों से जुड़े होने चाहिए।
- गरीबी, काम का अभाव, वृद्धों की असहायता और बच्चों का आपराधिक शोषण भिक्षावृत्ति के प्रमुख कारण हैं।

चरण 1: विवशता दूर करने के उपाय दीजिए भिक्षावृत्ति घटाने के लिए गरीब और बेरोजगार लोगों को काम तथा प्रशिक्षण देना चाहिए, जिससे वे सम्मानपूर्वक जीविका कमा सकें। बेसहारा वृद्धों और अशक्त व्यक्तियों को देखभाल, आश्रय तथा आवश्यक सहायता मिलनी चाहिए। इससे वे जीवन की बुनियादी जरूरतों के लिए भीख पर निर्भर नहीं रहेंगे।

चरण 2: शोषण रोकिए और सहायता का रूप बदलिए बच्चों का अपहरण कर उनसे भीख मँगवाने और उनका अंग-भंग करने वाले अपराधियों पर कठोर कार्रवाई होनी चाहिए। पीड़ित बच्चों को सुरक्षा, शिक्षा और पुनर्वास मिले। समाज को केवल पुण्य पाने के लिए अंधाधुंध भीख देने के बजाय भोजन, शिक्षा, उपचार और रोजगार जैसी वास्तविक सहायता देनी चाहिए। इससे जरूरतमंद को सहारा और आत्मनिर्भरता दोनों मिलेंगे।

चरण 3: निष्कर्ष रोजगार, कौशल-प्रशिक्षण, असहायों की देखभाल, बच्चों की सुरक्षा तथा भिक्षा के स्थान पर पुनर्वास और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहन देकर भिक्षावृत्ति से छुटकारा पाया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: उपायों को गद्यांश के कारणों से मिलाएँ : बेरोजगारी का रोजगार से और बच्चों के शोषण का सुरक्षा व पुनर्वास से समाधान दें।

1(ज). उपसर्ग-प्रत्यय अलग कीजिए : बाकायदा, धार्मिक । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपसर्ग मूल शब्द के पहले जुड़ता है और प्रत्यय मूल शब्द के बाद जुड़ता है।
- विभाजन करते समय मूल शब्द की पहचान और प्रत्यय लगने पर हुए स्वर-परिवर्तन का ध्यान रखें।

चरण 1: बाकायदा का उपसर्ग अलग कीजिए "बाकायदा में "बा उपसर्ग और "कायदा मूल शब्द है। अतः इसका शब्द-विभाजन "बा + कायदा होगा। उपसर्ग आरंभ में जुड़ा है; पूरे "बाकायदा को मूल शब्द नहीं मानना चाहिए।

चरण 2: धार्मिक का प्रत्यय अलग कीजिए "धार्मिक का मूल शब्द "धर्म और प्रत्यय "इक है। इसका निर्माण "धर्म + इक से हुआ है। प्रत्यय लगने पर मूल शब्द के स्वर में परिवर्तन हुआ और "धार्मिक रूप बना; इसलिए "धार्म को स्वतंत्र मूल शब्द नहीं लिखना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष बाकायदा = बा (उपसर्ग) + कायदा। धार्मिक = धर्म + इक (प्रत्यय)।

त्वरित सुझाव: बाकायदा में आरंभ का "बा पहचानें; धार्मिक का मूल "धर्म और प्रत्यय "इक है, स्वर-परिवर्तन से भ्रमित न हों।

1(झ). संयुक्त वाक्य में बदलिए — ग़रीबी के कारण बेसहारा लोग भीख माँगने लगते हैं । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संयुक्त वाक्य में दो स्वतंत्र उपवाक्य समुच्चयबोधक शब्द से जुड़ते हैं।
- रूपांतरण करते समय मूल वाक्य का कारण और परिणाम संबंध सुरक्षित रखना चाहिए।

चरण 1: कारण और परिणाम अलग कीजिए मूल वाक्य में ग़रीबी कारण है तथा बेसहारा लोगों का भीख माँगना उसका परिणाम है।

अत: पहले उपवाक्य में उनकी आर्थिक स्थिति और दूसरे में उसके फलस्वरूप होने वाला कार्य रखा जाएगा।

चरण 2: दो स्वतंत्र उपवाक्य जोड़िए पहला स्वतंत्र कथन है—बेसहारा लोग ग़रीब हैं। दूसरा स्वतंत्र कथन है—वे भीख माँगने लगते हैं। दोनों को परिणामसूचक समुच्चयबोधक शब्द 'इसलिए' से जोड़ने पर संयुक्त वाक्य बनता है। इसमें दोनों कथन अपने आप में पूरा अर्थ देते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष बेसहारा लोग ग़रीब हैं, इसलिए वे भीख माँगने लगते हैं।

त्वरित सुझाव: 'के कारण' वाला पदबंध पहले पूर्ण उपवाक्य में बदलिए और परिणाम को 'इसलिए' से जोड़िए।

---

2. शांति नहीं तब तक, जब तक
सुख-भाग न सबका सम हो ।
नहीं किसी को बहुत अधिक हो
नहीं किसी को कम हो ।
स्वत्व माँगने से न मिले,
संघात पाप हो जाएँ ।
बोलो धर्मराज, शोषित वे
जिएँ या कि मिट जाएँ ?
न्यायोचित अधिकार माँगने
से न मिले, तो लड़ के
तेजस्वी छीनते समय को,
जीत, या कि ख़ुद मर के ।
किसने कहा पाप है ? अनुचित
स्वत्व-प्राप्ति-हित लड़ना ?
उठा न्याय का खड्ग समर में
अभय मारना-मरना ? [5 अंक]

2(क). कवि के अनुसार शांति के लिए क्या आवश्यक शर्त है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में शांति का आधार सुख-सुविधाओं का समान वितरण है।
- उत्तर का आधार आरंभिक पंक्तियाँ हैं, जिनमें अधिकता और अभाव दोनों का विरोध है।

चरण 1: निर्णायक पंक्ति पहचानिए कवि कहता है—'शांति नहीं तब तक, जब तक सुख-भाग न सबका सम हो।' इससे स्पष्ट है कि समाज में सुखों की असमानता रहते स्थायी शांति संभव नहीं है।

चरण 2: आवश्यक शर्त स्पष्ट कीजिए सबको सुख-सुविधाओं और जीवन के साधनों में समान भाग मिलना चाहिए। किसी व्यक्ति को बहुत अधिक तथा किसी को बहुत कम नहीं मिलना चाहिए। यही आर्थिक-सामाजिक विषमता मिटने और शांति स्थापित होने की आवश्यक शर्त है।

चरण 3: निष्कर्ष शांति के लिए आवश्यक है कि सुख-सुविधाओं में सबकी समान भागीदारी हो तथा अत्यधिक संपन्नता और अभाव का अंतर मिटे।

त्वरित सुझाव: 'जब तक' से जुड़ी पंक्ति पढ़कर शांति की शर्त लिखिए; केवल युद्ध का अभाव कहना अधूरा है।

2(ख). युद्ध क्षेत्र को तेजस्वी किस प्रकार छीन लेते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तेजस्वी व्यक्ति अन्याय के सामने निष्क्रिय नहीं रहता।
- पद्यांश में न्यायोचित अधिकार की प्राप्ति के लिए साहसपूर्ण संघर्ष का समर्थन है।

चरण 1: संघर्ष का प्रसंग समझिए कवि बताता है कि न्यायोचित अधिकार केवल माँगने से न मिले तो तेजस्वी व्यक्ति संघर्ष का मार्ग अपनाते हैं। वे शोषण स्वीकार करके चुप नहीं बैठते और अपने अधिकार की रक्षा करते हैं।

चरण 2: तेजस्वियों की रीति बताइए वे निर्भय होकर युद्ध करते हैं और विजय पाकर अपना अधिकार छीन लेते हैं। इसके लिए वे अपने प्राणों का बलिदान करने से भी नहीं डरते। 'जीत, या कि ख़ुद मर के' में यही विजय अथवा आत्मबलिदान का संकल्प व्यक्त हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष तेजस्वी वीर साहसपूर्वक लड़कर, विजय प्राप्त करके अथवा अपने प्राणों का बलिदान देकर रणक्षेत्र में अपना अधिकार प्राप्त करते हैं।

त्वरित सुझाव: तेजस्वियों के साहस के साथ 'जीत, या कि ख़ुद मर के' में व्यक्त बलिदान का भाव भी लिखिए।

2(ग). न्यायोचित अधिकार के लिए मनुष्य को क्या करना चाहिए ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वत्व का अर्थ अपना उचित अधिकार है।
- पद्यांश अधिकार माँगने और न मिलने पर उसके लिए संघर्ष करने का क्रम बताता है।

चरण 1: पहला उपाय बताइए मनुष्य को पहले अपने न्यायोचित अधिकार की माँग करनी चाहिए। यहाँ माँग किसी दूसरे का अधिकार हड़पने की नहीं, बल्कि अपना उचित हिस्सा प्राप्त करने की है। इसलिए उसका आधार न्याय है।

चरण 2: अधिकार न मिलने पर कर्तव्य बताइए यदि उचित अधिकार माँगने पर भी न मिले तो अन्याय सहते रहने के बजाय साहसपूर्वक संघर्ष करना चाहिए। कवि 'न्याय का खड्ग' उठाने को कहता है; अतः संघर्ष न्याय की रक्षा के लिए है। उसमें कठिनाई और बलिदान का भय बाधा नहीं बनना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष मनुष्य को अपना न्यायोचित अधिकार माँगना चाहिए और न मिलने पर निर्भय होकर उसके लिए संघर्ष करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले अधिकार की माँग और फिर माँग पूरी न होने पर न्यायपूर्ण संघर्ष का क्रम रखिए।

2(घ). कृष्ण युधिष्ठिर को युद्ध के लिए क्यों प्रेरित कर रहे हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में प्रश्न के पात्रों को पद्यांश के न्याय और शोषण के विचार से जोड़ना है।
- अधिकार की रक्षा के लिए किया गया न्यायपूर्ण संघर्ष पाप नहीं माना गया है।

चरण 1: प्रेरणा का कारण पहचानिए पद्यांश में शोषितों के जीवन और अधिकार का प्रश्न उठाया गया है। जब माँगने पर भी न्यायोचित अधिकार न मिले तो अन्याय को चुपचाप स्वीकार करना समाधान नहीं है। इससे शोषण बना रहता है।

चरण 2: युद्ध का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए कृष्ण युधिष्ठिर को इसलिए प्रेरित कर रहे हैं कि वे अपने उचित अधिकार की रक्षा करें और अन्याय

का प्रतिरोध करें। कवि के अनुसार न्याय के लिए निर्भय होकर लड़ना पाप नहीं है। यहाँ प्रेरणा स्वार्थपूर्ण आक्रमण की नहीं, न्याय की स्थापना और शोषितों की रक्षा की है।

चरण 3: निष्कर्ष कृष्ण युधिष्ठिर को अन्याय समाप्त करने और न्यायोचित अधिकार प्राप्त करने के लिए युद्ध की प्रेरणा दे रहे हैं, क्योंकि न्याय की रक्षा हेतु संघर्ष पाप नहीं है।

त्वरित सुझाव: पात्रों के नाम देखकर कथा विस्तार न करें; उत्तर को पद्यांश के 'न्यायोचित अधिकार' से जोड़ें।

2(ङ). यदि आपको अधिकार से अन्यायपूर्वक वंचित किया जाता है तो आपको क्या करना चाहिए ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यावहारिक उत्तर पद्यांश के न्यायपूर्ण प्रतिरोध के संदेश पर आधारित होना चाहिए।
- अधिकार माँगने पर न मिलें तो अन्याय के विरुद्ध दृढ़ता आवश्यक है।

चरण 1: अपना उचित अधिकार माँगिए यदि मुझे अन्यायपूर्वक मेरे अधिकार से वंचित किया जाए तो मैं पहले अपना पक्ष स्पष्ट करके अधिकार की माँग करूँगा। अपनी माँग का आधार न्याय रखूँगा और दूसरे का अधिकार छीनने का प्रयास नहीं करूँगा।

चरण 2: अन्याय के सामने दृढ़ रहिए माँगने पर भी न्याय न मिले तो मैं भयभीत होकर अन्याय स्वीकार नहीं करूँगा। अपने अधिकार के लिए साहस और दृढ़ता से संघर्ष करूँगा। पद्यांश में इसी न्यायपूर्ण संघर्ष का समर्थन है; अधिकार की रक्षा के लिए कठिनाइयों का सामना करने का संकल्प आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष मैं पहले अपना उचित अधिकार माँगूँगा और न मिलने पर अन्याय के विरुद्ध निर्भय तथा दृढ़ होकर संघर्ष करूँगा।

त्वरित सुझाव: अपने उत्तर को प्रथम पुरुष में लिखिए और माँग से संघर्ष तक का क्रम पद्यांश के आधार पर बताइए।

3(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : समाचार-पत्रों का महत्त्व [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का परिचय, उसके प्रमुख पक्षों का क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक उपसंहार होना चाहिए।
- समाचार-पत्रों की उपयोगिता बताते हुए उनकी सामाजिक जिम्मेदारी और पाठक के विवेक का उल्लेख भी आवश्यक है।

चरण 1: विषय और रूपरेखा निर्धारित कीजिए शीर्षक के बाद भूमिका में समाचार-पत्र को सूचना और जनमत का माध्यम बताइए। मुख्य भाग में देश-विदेश की जानकारी, शिक्षा, लोकतंत्र और सामाजिक जागरूकता के पक्ष रखिए। अंत में निष्पक्ष पत्रकारिता तथा जागरूक पाठक की आवश्यकता स्पष्ट कीजिए। विचारों का क्रम ऐसा हो कि प्रत्येक अनुच्छेद विषय के एक पक्ष को विकसित करे।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध समाचार-पत्रों का महत्त्व

समाचार-पत्र समाज का दर्पण और जागरूक नागरिक का साथी है। प्रतिदिन वह हमारे घर तक देश-विदेश की घटनाएँ पहुँचाता है। राजनीति, अर्थव्यवस्था, खेल, विज्ञान और संस्कृति से जुड़ी जानकारी देकर वह हमारे ज्ञान का विस्तार करता है।

समाचार-पत्र का कार्य केवल घटनाएँ बताना नहीं है। संपादकीय और विचारपरक लेख किसी विषय के विभिन्न पक्षों को समझने में सहायता करते हैं। पाठक तथ्यों और तर्कों की तुलना करके अपना स्वतंत्र मत बना सकता है। विद्यार्थियों के लिए भाषा, सामान्य ज्ञान और समसामयिक विषयों की समझ विकसित करने में समाचार-पत्र उपयोगी है। रोजगार तथा प्रवेश संबंधी सूचनाएँ युवाओं का मार्गदर्शन करती हैं।

लोकतंत्र में समाचार-पत्रों की विशेष भूमिका है। वे शासन की नीतियों की समीक्षा करते हैं, जनता की समस्याओं को सामने लाते हैं और

प्रशासन को उत्तरदायी बनाते हैं। भ्रष्टाचार, पर्यावरण संकट और सामाजिक भेदभाव जैसे मुद्दों पर चर्चा समाज को बदलाव के लिए प्रेरित करती है। पाठकों के पत्र आम नागरिक को अपनी बात रखने का अवसर देते हैं।

इतनी प्रभावशाली भूमिका के साथ जिम्मेदारी भी जुड़ी है। अपुष्ट समाचार, सनसनी और पक्षपात पाठकों को भ्रमित कर सकते हैं। इसलिए पत्रकारिता में सत्य की जाँच, निष्पक्षता और मानवीय संवेदना आवश्यक हैं। पाठक को भी हर खबर को आँख मूँदकर स्वीकार करने के बजाय स्रोत और प्रमाण देखना चाहिए।

आज डिजिटल माध्यमों का विस्तार हुआ है, फिर भी विश्वसनीय और सुव्यवस्थित समाचार की आवश्यकता बनी हुई है। समाचार-पत्र तभी अपना उद्देश्य पूरा करते हैं जब वे जनहित को प्राथमिकता दें। जिम्मेदार पत्रकारिता और विवेकशील पाठक मिलकर एक जागरूक, शिक्षित और लोकतांत्रिक समाज का निर्माण कर सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार-पत्र सूचना, शिक्षा, जनमत और लोकतांत्रिक जागरूकता के महत्त्वपूर्ण साधन हैं। उनकी सार्थकता निष्पक्षता, विश्वसनीयता और जनहित के प्रति उत्तरदायित्व में है।

त्वरित सुझाव: निबंध में केवल लाभ न गिनाएँ; सूचना, शिक्षा और लोकतंत्र के पक्षों के बाद जिम्मेदार पत्रकारिता पर उपसंहार लिखें।

3(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : बढ़ती जनसंख्या घटते संसाधन [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह विषय जनसंख्या की वृद्धि और सीमित प्राकृतिक संसाधनों पर पड़ने वाले दबाव के संबंध को स्पष्ट करने की अपेक्षा करता है।
- निबन्ध में भूमिका, समस्या के कारण और प्रभाव, व्यावहारिक समाधान तथा निष्कर्ष का तार्किक क्रम रखा जाता है। संसाधनों के असमान वितरण और अपव्यय को भी ध्यान में रखना चाहिए।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति पहले जीवन के लिए आवश्यक भूमि, जल, भोजन और ऊर्जा का उल्लेख करें। फिर बढ़ती माँग का खेती, रोजगार, आवास और पर्यावरण पर प्रभाव समझाएँ। अंत में शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, स्वैच्छिक परिवार नियोजन और संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग को समाधान के रूप में रखें। बिना प्रमाण के आँकड़े देने के स्थान पर स्पष्ट उदाहरण दें।

चरण 2: आदर्श निबन्ध

बढ़ती जनसंख्या घटते संसाधन

प्रकृति ने मनुष्य को जीवन के लिए जल, भूमि, वन और खनिज जैसे अनेक उपहार दिए हैं। किंतु इनकी उपलब्धता असीम नहीं है। जब जनसंख्या तेजी से बढ़ती है और उपभोग अनियंत्रित होता है, तब इन्हीं संसाधनों पर दबाव बढ़ने लगता है। विकास की उपलब्धियाँ भी सबकी आवश्यकताएँ पूरी करने में अपर्याप्त पड़ सकती हैं।

बढ़ती आबादी को अधिक भोजन, मकान, विद्यालय, अस्पताल और रोजगार चाहिए। आवास तथा सड़कों के विस्तार के लिए खेती की भूमि और जंगल घटते हैं। अधिक जल की माँग के कारण भूजल का अत्यधिक दोहन होता है। ऊर्जा की बढ़ती खपत प्रदूषण को बढ़ाती है। परिणामस्वरूप स्वच्छ हवा, शुद्ध पेयजल और हरित क्षेत्र भी दुर्लभ होने लगते हैं। शहरों की भीड़, कूड़े के ढेर और यातायात का दबाव इस संकट को प्रत्यक्ष दिखाते हैं।

फिर भी समस्या के लिए केवल जनसंख्या को दोष देना उचित नहीं है। संसाधनों का असमान वितरण, अनावश्यक उपभोग और कुप्रबंधन भी संकट को गंभीर बनाते हैं। कहीं भोजन व्यर्थ फेंका जाता है, तो कहीं परिवार भूखे सोते हैं। इसलिए उपलब्ध साधनों का न्यायपूर्ण और कुशल उपयोग आवश्यक है।

समाधान के लिए जनसंख्या संबंधी जागरूकता, स्त्री शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ और स्वैच्छिक परिवार नियोजन को बढ़ावा देना चाहिए। साथ ही वर्षाजल संचयन, वृक्षारोपण, पुनर्चक्रण और सौर ऊर्जा जैसे उपाय अपनाने होंगे। नागरिक भी पानी और बिजली बचाकर तथा जरूरत भर खरीदकर योगदान दे सकते हैं।

जनसंख्या तभी शक्ति बनती है जब लोग शिक्षित, स्वस्थ और कुशल हों। संतुलित जनसंख्या, जिम्मेदार उपभोग और समान अवसरों के मेल से ही वर्तमान आवश्यकताओं तथा भावी पीढ़ियों के अधिकारों की रक्षा संभव है।

चरण 3: निष्कर्ष जनसंख्या की वृद्धि के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, न्यायपूर्ण वितरण और संसाधनों का संरक्षण आवश्यक है। निबन्ध समस्या

का विश्लेषण करके सकारात्मक तथा व्यावहारिक निष्कर्ष तक पहुँचता है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में जल, भूमि और ऊर्जा के तीन ठोस उदाहरण देकर प्रत्येक को एक व्यावहारिक संरक्षण उपाय से जोड़ें।

3(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : मोबाइल बिना सब लगे सूना [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस निबन्ध में मोबाइल की उपयोगिता, दैनिक जीवन में उसकी बढ़ती भूमिका और उस पर अत्यधिक निर्भरता का संतुलित विवेचन अपेक्षित है।
- शीर्षक की भावात्मक अभिव्यक्ति को आधार बनाकर संपर्क, अध्ययन और सेवाओं की सुविधा बतानी चाहिए; साथ ही समय, स्वास्थ्य और पारिवारिक संबंधों पर प्रभाव भी समझाना चाहिए।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति भूमिका में मोबाइल के बिना अधूरापन अनुभव करने की स्थिति रखें। मुख्य भाग में संचार, पढ़ाई और आवश्यक सेवाओं के उदाहरण दें। फिर लत, निजता और प्रत्यक्ष संवाद की उपेक्षा पर विचार करें। अंत में सीमित और विवेकपूर्ण उपयोग का संदेश दें। निबन्ध के लिए शीर्षक तथा सुव्यवस्थित अनुच्छेद पर्याप्त हैं; पत्र जैसा संबोधन या समापन नहीं चाहिए।

चरण 2: आदर्श निबन्ध

मोबाइल बिना सब लगे सूना

सुबह आँख खुलते ही समय देखने से लेकर रात को दूर बैठे अपने लोगों से बात करने तक मोबाइल हमारा साथी बन गया है। कभी घर से निकलते समय उसे भूल जाएँ तो ऐसा लगता है जैसे कोई जरूरी वस्तु पीछे रह गई हो। इसी अनुभव को शीर्षक व्यक्त करता है कि मोबाइल के बिना सब सूना लगता है।

मोबाइल ने दूरियों को छोटा कर दिया है। अब परिवार के सदस्य दूर रहकर भी बातचीत और वीडियो के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। आपात स्थिति में सहायता बुलाना सरल हुआ है। विद्यार्थी शिक्षण सामग्री पढ़ सकते हैं, कठिन विषय समझ सकते हैं और आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त कर सकते हैं। यात्रा का मार्ग जानने, टिकट लेने तथा विभिन्न सेवाओं तक पहुँचने में भी मोबाइल उपयोगी है। छोटे व्यापारियों के लिए यह ग्राहकों से संपर्क और लेनदेन का सुविधाजनक साधन है।

लेकिन सुविधा धीरे-धीरे निर्भरता बन जाए तो समस्या उत्पन्न होती है। लगातार संदेश देखते रहने से पढ़ाई और काम में एकाग्रता घटती है। परिवार के लोग पास बैठकर भी अपनी-अपनी स्क्रीन में खोए रहते हैं। देर रात तक मोबाइल चलाने से नींद प्रभावित होती है। अप्रमाणित समाचार, धोखाधड़ी और निजी जानकारी का दुरुपयोग भी गंभीर चुनौतियाँ हैं। हर चमकती सूचना उपयोगी नहीं होती और हर ऑनलाइन परिचय विश्वास के योग्य नहीं होता।

इसलिए मोबाइल का उपयोग उद्देश्य और समय तय करके करना चाहिए। पढ़ाई, भोजन और पारिवारिक बातचीत के समय अनावश्यक सूचनाएँ बंद रखी जा सकती हैं। अनजान लोगों से निजी जानकारी साझा न करना तथा किसी संदेश को आगे भेजने से पहले जाँचना भी जरूरी है। खेल, पुस्तकें और मित्रों से प्रत्यक्ष मिलना जीवन का हिस्सा बने रहना चाहिए।

मोबाइल जीवन को सुविधाजनक बनाने वाला साधन है। उसका विवेकपूर्ण उपयोग हमें संसार से जोड़ता है, किंतु जीवन की वास्तविक आत्मीयता मनुष्यों के बीच रहती है। मोबाइल साथ हो तो सुविधा बढ़े और उसके बिना भी जीवन आनंदपूर्ण रहे, यही स्वस्थ संतुलन है।

चरण 3: निष्कर्ष मोबाइल संचार और सेवाओं का उपयोगी साधन है; समयबद्ध उपयोग, सूचना की जाँच और आत्मीय संबंधों के लिए समय निकालकर उसकी सुविधाओं का स्वस्थ लाभ लिया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: मोबाइल पर निबन्ध लिखते समय उपयोगिता के बाद निर्भरता का उदाहरण दें और अंत में समय-सीमा तथा सुरक्षित उपयोग के उपाय जोड़ें।

3(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : नारी जीवन का संघर्ष [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सामाजिक विषय के निबंध में भूमिका, समस्या के विविध पक्ष, सुधार के उपाय तथा आशापूर्ण उपसंहार का क्रम रखा जाता है।
- नारी जीवन का संघर्ष केवल निजी कठिनाइयों का वर्णन नहीं है; यह शिक्षा, सम्मान, सुरक्षा और समान अवसरों के लिए किए जाने वाले प्रयासों का विषय है।

चरण 1: विषय का विस्तार और रूपरेखा भूमिका में समाज में नारी के योगदान का उल्लेख करें। मुख्य भाग में परिवार तथा कार्यस्थल की असमानता, शिक्षा की बाधाएँ, आर्थिक निर्भरता और सुरक्षा की समस्या लें। अंत में अधिकारों की जानकारी, शिक्षा, आत्मनिर्भरता और सामाजिक सहयोग के उपाय देकर निष्कर्ष लिखें। सभी स्त्रियों के अनुभव एक जैसे मानने के बजाय परिस्थितियों की विविधता का ध्यान रखें।

चरण 2: संपूर्ण आदर्श निबंध **नारी जीवन का संघर्ष**

नारी परिवार और समाज की निर्माणकर्ता है। माँ, शिक्षिका, किसान, वैज्ञानिक और प्रशासक के रूप में वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में योगदान देती है। फिर भी उसके योगदान को बराबर सम्मान और अवसर मिलना आज भी एक चुनौती है। नारी जीवन का संघर्ष इसी असमानता से मुक्ति का संघर्ष है।

अनेक बालिकाओं के लिए संघर्ष बचपन से आरंभ हो जाता है। पुत्र को प्राथमिकता देने वाली सोच के कारण उनकी शिक्षा, पोषण और इच्छाओं की उपेक्षा होती है। कहीं घरेलू कामों का भार पढ़ाई रोक देता है, तो कहीं कम आयु में विवाह आगे बढ़ने का अवसर छीन लेता है। अशिक्षा और आर्थिक निर्भरता के कारण अन्याय का विरोध करना भी कठिन हो जाता है।

शिक्षित और कामकाजी स्त्रियों की समस्याएँ भी समाप्त नहीं हुई हैं। वे कार्यालय के दायित्वों के साथ घर की अधिकांश जिम्मेदारियाँ उठाती हैं। कई स्थानों पर उनके श्रम का उचित मूल्य नहीं मिलता और निर्णय लेने की क्षमता पर संदेह किया जाता है। असुरक्षा, उत्पीड़न और सामाजिक दबाव उनकी स्वतंत्रता को सीमित करते हैं। ग्रामीण महिलाओं का खेत और घर में किया गया कठोर परिश्रम भी प्रायः पर्याप्त पहचान नहीं पाता।

इन कठिनाइयों के बीच स्त्रियाँ निरंतर आगे बढ़ रही हैं। शिक्षा और रोजगार ने उनमें आत्मविश्वास जगाया है। वे अपने अधिकार समझ रही हैं और विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व कर रही हैं। उनका यह प्रयास दिखाता है कि अवसर मिलने पर प्रतिभा किसी सीमा में नहीं बँधती।

इस संघर्ष को केवल महिलाओं की जिम्मेदारी मानना उचित नहीं है। परिवार को बेटा-बेटी में भेद समाप्त करना चाहिए। लड़कियों की शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा सुनिश्चित हों। घरेलू कार्यों का न्यायपूर्ण बँटवारा हो तथा कार्यस्थलों पर सम्मान और समान अवसर मिलें। कानूनों का प्रभावी पालन और पीड़ित महिलाओं को सुलभ सहायता भी आवश्यक है।

नारी की उन्नति पूरे समाज की उन्नति है। जब उसे दया का पात्र समझने के बजाय स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार किया जाएगा, तभी उसका संघर्ष सार्थक परिवर्तन बनेगा। समानता और सम्मान पर आधारित समाज ही सच्ची प्रगति का आधार है।

चरण 3: निष्कर्ष नारी जीवन के संघर्ष का समाधान शिक्षा, आत्मनिर्भरता, सुरक्षा और समान अवसरों में है। प्रस्तुत निबंध समस्या के कारणों से उपायों तक क्रमबद्ध विचार प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: सामाजिक निबंध में समस्या बताने के बाद परिवार, समाज और शासन के स्तर पर ठोस उपाय अवश्य दें; केवल भावनात्मक अपील पर न रुकें।

4. मोहल्ले में नए आए कुछ नवयुवकों की गतिविधियों पर आपको संदेह है और आपने ऐसी गतिविधियों को कैमरे में क़ैद भी किया है। संदेह का आधार बताते हुए पुलिस आयुक्त को उपयुक्त क़दम उठाने के लिए पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुलिस आयुक्त को लिखा गया पत्र औपचारिक शिकायत-पत्र है। उसमें प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, तथ्यपूर्ण निवेदन और समापन आवश्यक हैं।
- संदेह को प्रमाणित अपराध की तरह नहीं लिखना चाहिए। देखी गई गतिविधियों और उपलब्ध कैमरा-रिकॉर्डिंग का उल्लेख करके निष्पक्ष जाँच तथा आवश्यक कार्रवाई का अनुरोध करना उचित है।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना पहले अपना पता और दिनांक लिखें। फिर पुलिस आयुक्त का पद तथा कार्यालय का पता देकर विषय में संदिग्ध गतिविधियों की जाँच का अनुरोध करें। मुख्य भाग में मोहल्ले का परिचय, संदेह के स्पष्ट कारण और कैमरे में सुरक्षित दृश्य बताएँ। अंत में पुलिस गश्त, रिकॉर्डिंग की जाँच तथा आवश्यक कार्रवाई का निवेदन करें। भाषा विनम्र रखें और व्यक्तिगत आक्षेप से बचें।

चरण 2: संपूर्ण आदर्श पत्र 25, शांति नगर
नई दिल्ली
15 मार्च, 2015

सेवा में,
पुलिस आयुक्त महोदय
दिल्ली पुलिस मुख्यालय
नई दिल्ली

विषय: मोहल्ले में कुछ नवयुवकों की संदिग्ध गतिविधियों की जाँच हेतु अनुरोध।

महोदय,

मैं शांति नगर का निवासी हूँ। हमारे मोहल्ले के मकान संख्या 42 में कुछ नवयुवक हाल ही में किराए पर रहने आए हैं। पिछले कुछ दिनों से उनकी गतिविधियों के कारण निवासियों में चिंता है। आपके संज्ञान में कुछ तथ्य लाना चाहता हूँ, जिससे समय रहते उनकी जाँच हो सके।

इन युवकों के यहाँ देर रात अपरिचित व्यक्तियों का आना-जाना रहता है। कई बार रात में बिना स्पष्ट पहचान वाले बड़े पैकेट गाड़ियों से उतारे गए हैं। दिन के समय वे प्रायः आसपास के बंद मकानों की तस्वीरें लेते और प्रवेश-द्वारों के निकट देर तक रुकते दिखाई दिए हैं। पूछने पर उन्होंने कोई स्पष्ट कारण नहीं बताया। इन घटनाओं से हमें संदेह हुआ है, यद्यपि इनका वास्तविक उद्देश्य पुलिस की जाँच से ही स्पष्ट हो सकेगा।

मैंने अपने घर के कैमरे में दर्ज संबंधित दृश्यों को उनकी तारीख और समय सहित सुरक्षित रखा है। मैं उनकी प्रति जाँच अधिकारी को देने के लिए तैयार हूँ। कृपया स्थानीय पुलिस को इन गतिविधियों की निष्पक्ष जाँच करने, किराएदारों का सत्यापन करने तथा क्षेत्र में रात्रि-गश्त बढ़ाने का निर्देश दें। जाँच में किसी अवैध कार्य की पुष्टि होने पर उचित कार्रवाई की जाए।

आशा है कि आप निवासियों की सुरक्षा के लिए शीघ्र आवश्यक कदम उठाएँगे। मैं जाँच में पूरा सहयोग करूँगा।

धन्यवाद।

भवदीय
अमित कुमार
निवासी, शांति नगर

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में संदेह के ठोस आधार, कैमरे में सुरक्षित सामग्री और पुलिस से अपेक्षित कार्रवाई का स्पष्ट उल्लेख है। औपचारिक प्रारूप तथा विनम्र, तथ्यपरक भाषा का पालन किया गया है।

त्वरित सुझाव: शिकायत-पत्र में देखी गई घटना, उसका समय और उपलब्ध प्रमाण अलग-अलग स्पष्ट करें; संदेह को अंतिम आरोप बनाए बिना जाँच का अनुरोध करें।

अथवा

4. यातायात नियमों की अनदेखी करना कुछ युवकों का शौक बनता जा रहा है, जिससे नियम-पालन करने वाले नागरिकों को असुविधा होती है । इस मुद्दे की चर्चा करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखा जाने वाला पत्र सार्वजनिक समस्या के प्रति जनमत और प्रशासन का ध्यान आकर्षित करता है। भाषा शिष्ट, तथ्यपरक और संक्षिप्त होनी चाहिए।
- पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, समस्या और सुझाव, समापन तथा नाम दिए जाते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना पत्र में पहले यातायात नियमों की अवहेलना के रूप बताएँगे। फिर नियमों का पालन करने वाले नागरिकों पर उनके प्रभाव की चर्चा करेंगे। अंत में जनजागरण, निगरानी तथा नियमों के निष्पक्ष क्रियान्वयन के सुझाव देंगे। सभी युवाओं पर आरोप लगाने के बजाय केवल नियम तोड़ने वाले कुछ युवकों की गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

चरण 2: संपादक के नाम पूरा पत्र 24, शांति विहार
नई दिल्ली
15 मार्च, 2015
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक हिंदुस्तान,
नई दिल्ली।
विषय: युवकों द्वारा यातायात नियमों की अनदेखी की समस्या।
महोदय,
आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं यातायात नियमों की बढ़ती अवहेलना की ओर नागरिकों और संबंधित अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।
कुछ युवक तेज गति से वाहन चलाना, लाल बत्ती पार करना और गलत दिशा से निकलना अपनी बहादुरी समझते हैं। वे बिना हेलमेट वाहन चलाते हैं तथा वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग भी करते हैं। इस लापरवाही से सड़क पर दुर्घटनाओं की आशंका बढ़ जाती है। नियमों का पालन करने वाले वाहनचालकों, पैदल यात्रियों, बच्चों और बुजुर्गों को असुविधा और असुरक्षा का सामना करना पड़ता है। यातायात जाम और अनावश्यक शोर से भी नागरिक परेशान होते हैं।
आवश्यक है कि यातायात पुलिस व्यस्त चौराहों पर निगरानी बढ़ाए और नियम तोड़ने वालों पर निष्पक्ष कार्रवाई करे। विद्यालयों और महाविद्यालयों में सड़क-सुरक्षा संबंधी कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ। अभिभावक भी बच्चों को जिम्मेदार वाहनचालन के लिए प्रेरित करें।
कृपया इस समस्या को अपने पत्र में स्थान देकर जनजागरण में सहयोग करें।
धन्यवाद।
भवदीय,
अमन कुमार

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में समस्या, नागरिकों पर उसका प्रभाव और व्यावहारिक उपाय शिष्ट तथा क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र लिखते समय केवल शिकायत न करें; सार्वजनिक हित, नियम-पालन और सुधार के ठोस सुझाव भी अवश्य जोड़ें।

5(क). संचार प्रक्रिया में फीडबैक किसे कहते हैं और इसका क्या महत्त्व है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संचार में प्रेषक संदेश भेजता है और प्राप्तकर्ता उसे समझकर प्रतिक्रिया देता है।
- प्राप्तकर्ता की प्रतिक्रिया से संदेश की समझ और संचार की प्रभावशीलता का पता चलता है।

चरण 1: फीडबैक का अर्थ संदेश प्राप्त करने के बाद प्राप्तकर्ता द्वारा प्रेषक को दी गई प्रतिक्रिया फीडबैक कहलाती है। यह प्रतिक्रिया मौखिक, लिखित या संकेतों के रूप में हो सकती है।

चरण 2: फीडबैक का महत्त्व इससे प्रेषक जान पाता है कि उसका संदेश सही रूप में समझा गया है या नहीं। आवश्यकता होने पर वह संदेश स्पष्ट करता है; इस प्रकार संचार की प्रक्रिया पूर्ण और प्रभावी बनती है।

चरण 3: निष्कर्ष फीडबैक प्राप्तकर्ता की प्रतिक्रिया है; यह संदेश की सही समझ सुनिश्चित करने और संचार को प्रभावी बनाने में सहायक है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले प्राप्तकर्ता की प्रतिक्रिया लिखें, फिर संदेश समझे जाने की पुष्टि को उसका महत्त्व बताएँ।

5(ख). समाचार शब्द को परिभाषित कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार किसी घटना की तथ्यपरक सूचना है, जिसमें नवीनता और सार्वजनिक महत्त्व होता है।
- हर व्यक्तिगत जानकारी समाचार नहीं बनती; उसका लोगों से सरोकार होना आवश्यक है।

चरण 1: परिभाषा समाचार किसी नवीन घटना, विचार या समस्या की ऐसी तथ्यपरक सूचना है, जिसमें लोगों की रुचि हो और जिसका सार्वजनिक महत्त्व हो।

चरण 2: मुख्य विशेषताएँ समाचार में सूचना की नवीनता, सत्यता तथा जनसरोकार प्रमुख हैं। उसे अफवाह या व्यक्तिगत कल्पना की तरह प्रस्तुत नहीं किया जाता; उसकी नींव प्रमाणित तथ्यों पर होती है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार नवीन और जनरुचि से जुड़ी घटना या विचार की सत्य, तथ्यपरक तथा सार्वजनिक महत्त्व की सूचना है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा लिखते समय नवीनता, तथ्यपरकता और जनरुचि का उल्लेख करें; केवल घटना का वर्णन लिखना पर्याप्त नहीं है।

5(ग). इंटरनेट की लोकप्रियता के दो कारणों का उल्लेख कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इंटरनेट सूचना प्राप्त करने और संचार का तेज माध्यम है।
- इसमें पाठ, ध्वनि और चित्र सहित अनेक रूपों में जानकारी सुलभ होती है।

चरण 1: पहला कारण: त्वरित और व्यापक पहुँच इंटरनेट पर देश-विदेश की सूचनाएँ बहुत कम समय में उपलब्ध हो जाती हैं। उपयोगकर्ता अपनी आवश्यकता की जानकारी किसी भी समय खोज सकता है और दूर बैठे लोगों से तुरंत संपर्क कर सकता है।

चरण 2: दूसरा कारण: कम लागत और बहुमाध्यमीय सुविधा इंटरनेट पर अपेक्षाकृत कम खर्च में पाठ, चित्र, ध्वनि और वीडियो के रूप में सामग्री मिलती है। एक ही माध्यम में अनेक प्रकार की सामग्री का सुलभ होना उसे उपयोगी और लोकप्रिय बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष इंटरनेट की लोकप्रियता के दो कारण हैं: सूचनाओं की त्वरित, व्यापक उपलब्धता और कम लागत में बहुमाध्यमीय सामग्री की सुविधा।

त्वरित सुझाव: दो कारण अलग-अलग लिखें: पहले सूचना की गति और पहुँच, फिर कम खर्च तथा सामग्री की विविधता समझाएँ।

5(घ). किसी समाचार की प्रस्तुति में जनरुचि का क्या महत्त्व है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनरुचि का अर्थ लोगों के सरोकारों और जानने की आवश्यकता से है।
- समाचार की प्रस्तुति में पाठकों के लिए प्रासंगिक तथ्यों को प्रमुखता दी जाती है।

चरण 1: जनरुचि की भूमिका जनरुचि से यह तय करने में सहायता मिलती है कि किसी घटना के कौन-से पक्ष पाठकों के लिए अधिक उपयोगी और महत्त्वपूर्ण हैं। ऐसे पक्षों को समाचार की प्रस्तुति में प्रमुखता दी जाती है।

चरण 2: प्रस्तुति पर प्रभाव लोगों की रुचि और सरोकार से जुड़ी प्रस्तुति समाचार को पठनीय और प्रभावशाली बनाती है। किंतु रुचि बढ़ाने के लिए तथ्यों को तोड़ना-मरोड़ना या सनसनी फैलाना उचित नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष जनरुचि समाचार के प्रासंगिक पक्षों को प्रमुखता देकर उसे पाठकों के लिए उपयोगी, आकर्षक और प्रभावी बनाती है।

त्वरित सुझाव: जनरुचि को पाठकों के सरोकारों से जोड़ें और बताएँ कि इससे समाचार के चयन तथा प्रमुखता का निर्धारण होता है।

5(ङ). संपादन में वस्तुपरकता से क्या तात्पर्य है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वस्तुपरकता का आधार प्रमाणित तथ्य और निष्पक्ष दृष्टि है।
- संपादकीय निर्णय में निजी पसंद, पूर्वाग्रह या पक्षपात को तथ्य पर हावी नहीं होने देना चाहिए।

चरण 1: वस्तुपरकता का अर्थ संपादन में वस्तुपरकता का तात्पर्य समाचार को निजी विचारों, पूर्वाग्रहों और पक्षपात से मुक्त रखकर प्रमाणित तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत करना है।

चरण 2: व्यावहारिक रूप संपादक संबंधित पक्षों की बात को निष्पक्ष रूप से स्थान देता है और तथ्य तथा निजी राय में अंतर रखता है। समाचार का आशय अपनी पसंद के अनुकूल बदलना वस्तुपरक संपादन के विरुद्ध है।

चरण 3: निष्कर्ष वस्तुपरकता का अर्थ है निजी आग्रहों से मुक्त होकर तथ्यों पर आधारित निष्पक्ष संपादन करना।

त्वरित सुझाव: उत्तर में तथ्य और निष्पक्षता दोनों शब्दों का आशय स्पष्ट करें; वस्तुपरकता को केवल भाषा सुधार तक सीमित न रखें।

6. 'गाँवों से पलायन' पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में किसी सामाजिक विषय पर तथ्यपूर्ण विचार, उसके कारण, प्रभाव और समाधान क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किए जाते हैं।
- प्रभावी शीर्षक, लेखक का नाम तथा भूमिका, विषय-विस्तार और उपसंहार आलेख को व्यवस्थित बनाते हैं। भाषा सरल, तार्किक और विषयानुकूल होनी चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय की सीमा तय करना विषय गाँवों से लोगों के शहरों की ओर जाने की प्रवृत्ति है। आलेख में पहले ग्रामीण जीवन की स्थिति, फिर पलायन के आर्थिक और सामाजिक कारण, उसके प्रभाव तथा अंत में व्यावहारिक उपाय आएँगे। शीर्षक के नीचे लेखक का नाम दिया जाएगा।

चरण 2: विषय-विस्तार की योजना बनाना रोजगार की कमी, कृषि की अनिश्चित आय, शिक्षा और स्वास्थ्य की सीमित सुविधाएँ मुख्य कारण हैं। शहरों में बढ़ती भीड़ और गाँवों में घटती श्रमशक्ति प्रभाव हैं। समाधान के लिए गाँवों में स्थानीय रोजगार तथा आवश्यक सेवाओं का विस्तार सुझाया जाएगा। हर शहर जाने वाले व्यक्ति को दोष देने के स्थान पर उन परिस्थितियों पर विचार करना उचित है जो उसे घर छोड़ने को विवश करती हैं।

चरण 3: संपूर्ण आदर्श आलेख **गाँवों से पलायन: अवसरों की तलाश**

लेखक: अमित कुमार

गाँव भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था का महत्त्वपूर्ण आधार हैं। फिर भी अनेक ग्रामीण परिवार बेहतर भविष्य की आशा में शहरों का रुख कर रहे हैं। अपना घर, खेत और परिचित परिवेश छोड़ना आसान नहीं होता; प्रायः यह निर्णय अवसरों की कमी से उत्पन्न होता है।

गाँवों में रोजगार के साधन सीमित हैं। छोटी जोत, सिंचाई की कठिनाइयाँ तथा फसल का उचित मूल्य न मिलना खेती की आय को अनिश्चित बनाते हैं। अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और प्रशिक्षण की कमी भी युवाओं को बाहर जाने के लिए प्रेरित करती है। शहरों का आकर्षण इस प्रवृत्ति को और बढ़ाता है।

पलायन से कुछ परिवारों की आय बढ़ती है, लेकिन इसके दुष्परिणाम भी हैं। गाँवों में बुजुर्ग अकेले पड़ जाते हैं और स्थानीय कामों के लिए श्रमिक कम होने लगते हैं। दूसरी ओर शहरों में आवास, पानी, परिवहन और रोजगार पर दबाव बढ़ता है। असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले अनेक लोगों को असुरक्षित परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है।

समाधान लोगों के आने-जाने पर रोक लगाना नहीं, बल्कि गाँवों में सम्मानजनक जीवन के अवसर बनाना है। कृषि आधारित उद्योग, कुटीर उद्योग और कौशल प्रशिक्षण से स्थानीय रोजगार बढ़ाया जा सकता है। बेहतर विद्यालय, अस्पताल, सड़क और संचार सुविधाएँ भी आवश्यक हैं। विकास के अवसर जब गाँव तक पहुँचेंगे, तब पलायन विवशता के बजाय व्यक्ति का स्वतंत्र विकल्प बन सकेगा।

चरण 4: निष्कर्ष आलेख गाँवों से पलायन के कारणों, ग्रामीण और शहरी जीवन पर उसके प्रभावों तथा स्थानीय रोजगार और बुनियादी सुविधाओं पर आधारित समाधान को संतुलित ढंग से प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: सामाजिक विषय के आलेख में कारण, प्रभाव और समाधान के लिए अलग अनुच्छेद रखें तथा अंत में विषय से जुड़ा व्यावहारिक सुझाव दें।

अथवा

6. 'बाढ़ की विभीषिका' पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदा के स्वरूप, मानवीय जीवन पर उसके प्रभाव और बचाव के उपायों का सुव्यवस्थित विवेचन किया जाता है।
- विषय का मार्मिक चित्रण करते समय भाषा संयमित और तथ्यपूर्ण रखी जाती है। उपयुक्त शीर्षक और लेखक के नाम के बाद अनुच्छेदों

में विचार विकसित किए जाते हैं।

चरण 1: प्रारूप और प्रस्तुति तय करना शीर्षक के नीचे लेखक का नाम देकर आरंभ में बाढ़ का सामान्य दृश्य प्रस्तुत किया जाएगा। फिर उसके कारण, जनजीवन की क्षति और राहत तथा दीर्घकालीन बचाव के उपाय क्रम से लिखे जाएँगे। किसी काल्पनिक घटना को वास्तविक समाचार बताने या बिना आधार के आँकड़े देने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 2: विषय-वस्तु का क्रम बनाना अत्यधिक वर्षा, नदियों का उफान और जलनिकासी की बाधाएँ बाढ़ के कारणों में आएँगे। घरों, फसलों, पशुओं और जनस्वास्थ्य की हानि से विभीषिका स्पष्ट होगी। सुरक्षित निकासी, स्वच्छ पानी तथा राहत कार्य तात्कालिक उपाय हैं; जलनिकासी, वनों का संरक्षण और समय पर चेतावनी दीर्घकालीन उपाय हैं।

चरण 3: संपूर्ण आदर्श आलेख **बाढ़ की विभीषिका**

लेखक: अमित कुमार

जल जीवन का आधार है, परंतु जब वही जल सीमाएँ तोड़कर बस्तियों में फैल जाता है तो विनाश का कारण बनता है। बाढ़ के समय चारों ओर फैला पानी, डूबे हुए घर और सुरक्षित स्थान खोजते लोग प्रकृति के विकराल रूप का अनुभव कराते हैं।

लगातार मूसलाधार वर्षा और नदियों का उफान बाढ़ के प्रमुख कारण हैं। नालों का अवरुद्ध होना, जलग्रहण क्षेत्रों में वनों की कटाई और बाढ़ प्रभावित मैदानों पर अनियोजित निर्माण संकट को बढ़ाते हैं। पानी के निकलने का मार्ग रुक जाने से कई स्थानों पर स्थिति और गंभीर हो जाती है।

बाढ़ सबसे अधिक गरीब और असुरक्षित परिवारों को प्रभावित करती है। घर गिर जाते हैं, फसलें नष्ट होती हैं और पशुधन बह जाता है। सड़कें टूटने से यातायात तथा आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति बाधित होती है। दूषित पानी के कारण बीमारियों का खतरा बढ़ता है। बच्चों की पढ़ाई रुक जाती है और विस्थापित परिवारों को आश्रय तथा भोजन के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

संकट के समय लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाना पहली आवश्यकता है। राहत शिविरों में भोजन, स्वच्छ पेयजल, दवाओं और स्वच्छता की व्यवस्था होनी चाहिए। प्रशासन, स्वयंसेवी संस्थाओं और नागरिकों का सहयोग राहत को प्रभावी बनाता है। अफवाहों से बचना और आधिकारिक चेतावनियों का पालन करना भी जरूरी है।

केवल राहत पर्याप्त नहीं है। जलनिकासी की नियमित सफाई, तटबंधों का रखरखाव, वनों का संरक्षण और बाढ़ संभावित क्षेत्रों में सावधानीपूर्वक निर्माण आवश्यक है। पूर्व चेतावनी तथा स्थानीय स्तर पर बचाव का प्रशिक्षण जनहानि घटा सकते हैं। प्रकृति के अनुकूल विकास और सामूहिक तैयारी से बाढ़ की विभीषिका को कम किया जा सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष आलेख बाढ़ के विनाशकारी स्वरूप के साथ उसके कारणों और प्रभावों का विवेचन करता है तथा तात्कालिक राहत और दीर्घकालीन तैयारी दोनों की आवश्यकता स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: आपदा विषयक आलेख में केवल विनाश का वर्णन न करें; अंत में राहत, बचाव और भविष्य की तैयारी के ठोस उपाय भी लिखें।

7. 'विलुप्त होती गौरैया' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी विषय को संवेदनशील, रोचक और तथ्यपरक ढंग से प्रस्तुत करता है। इसमें दृश्यात्मक आरंभ, कारणों का विवेचन और विचार जगाने वाला अंत उपयोगी होते हैं।
- गौरैया पर लिखते समय उसके घरेलू परिवेश, घटते प्राकृतिक आश्रयों और संरक्षण के व्यावहारिक उपायों को जोड़ना चाहिए। अप्रमाणित आँकड़े देने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति आकर्षक शीर्षक तथा लेखक का नाम दें। आरंभ में घर के आँगन का परिचित दृश्य रखें और आज की चुप्पी से विषय उभारें। मध्य भाग में पक्के मकानों में घोंसलों की जगह घटना, हरियाली का अभाव तथा कीटनाशकों से भोजन पर पड़ता प्रभाव समझाएँ। अंत में दाना-पानी, सुरक्षित घोंसले और पौधे लगाने जैसे उपाय देकर पाठक की भागीदारी जगाएँ। भाषा आत्मीय हो, पर गौरैया की कमी का कोई एक अप्रमाणित कारण निश्चित रूप से न बताया जाए।

चरण 2: पूर्ण मॉडल फ़ीचर गौरैया की चहचहाहट कहाँ खो गई?

लेखक: एक प्रकृतिप्रेमी

कभी सुबह की शुरुआत खिड़की पर बैठी गौरैया की चहचहाहट से होती थी। आँगन में बिखरे दानों पर फुदकती यह नन्ही चिड़िया घर की सदस्य जैसी लगती थी। आज अनेक शहरी बस्तियों में उसकी जगह एक उदास चुप्पी सुनाई देती है। क्या विकास की दौड़ में हमने अपने छोटे पड़ोसी का घर छीन लिया है?

बदलते मकान और बदलती आदतें गौरैया के लिए कठिनाइयाँ बढ़ा रही हैं। पुराने घरों के रोशनदान और छज्जे उसे घोंसले का आश्रय देते थे। बंद खिड़कियों और चिकनी दीवारों वाले भवनों में ऐसे कोने कम मिलते हैं। खुली मिट्टी, झाड़ियाँ और छोटे पेड़ घटने से उसका परिचित परिवेश भी सिमटता है। कीटनाशकों का अधिक प्रयोग उन कीड़ों को कम करता है जो उसके बच्चों का भोजन बनते हैं।

गौरैया का गायब होना केवल एक आवाज़ का खोना नहीं है; यह हमारे आसपास की प्रकृति के बदलने का संकेत भी है। बच्चे यदि चिड़िया को केवल किताब में पहचानेंगे, तो उनके अनुभव की दुनिया कितनी सूनी होगी!

इस चुप्पी को हम मिलकर तोड़ सकते हैं। बालकनी में सुरक्षित जगह पर उथला पानी का पात्र रखें और उसे नियमित साफ करें। थोड़े दाने डालें, स्थानीय पौधे लगाएँ और घोंसले के लिए उपयुक्त सुरक्षित स्थान छोड़ें। पानी और घोंसला बिल्लियों की पहुँच से दूर रहें। मोहल्ले और विद्यालय भी ऐसी छोटी पहल कर सकते हैं।

गौरैया को लौटने के लिए बड़े भाषण नहीं, रहने योग्य छोटा-सा संसार चाहिए। अगली सुबह उसकी चहचहाहट सुनने की तैयारी आज ही क्यों न करें?

चरण 3: निष्कर्ष यह फ़ीचर गौरैया की घटती उपस्थिति को आत्मीय दृश्य से जोड़ता है, उसके कारणों पर विचार करता है और संरक्षण के ठोस उपाय सुझाता है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर में समस्या बताने के बाद पाठक के करने योग्य छोटा और स्पष्ट काम अवश्य सुझाएँ।

अथवा

7. 'काम पर जाते बच्चे' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर में किसी सामाजिक समस्या का मानवीय पक्ष रोचक दृश्य, संवेदनशील भाषा और कारणों के विश्लेषण द्वारा सामने आता है।
- बाल श्रम पर लेख में बच्चों के अधिकार, शिक्षा से दूरी, आर्थिक विवशता और समाज की जिम्मेदारी को केंद्र में रखें। किसी वास्तविक सर्वेक्षण के बिना आँकड़े न गढ़ें।

चरण 1: प्रारूप और विषय-विस्तार शीर्षक के बाद लेखक का नाम दें। सुबह काम पर जाते बच्चे के दृश्य से आरंभ करें। उसकी उम्र और उसके बोझ के विरोध से संवेदना जगाएँ। फिर गरीबी, पारिवारिक संकट और सस्ते श्रम की माँग का संबंध समझाएँ। अंत में शिक्षा, परिवार की सहायता और बच्चों को काम पर न रखने की सामाजिक जिम्मेदारी बताएँ। बच्चे या उसके माता-पिता को दोषी ठहराने के स्थान पर परिस्थितियों और समाधान पर ध्यान दें।

चरण 2: पूर्ण मॉडल फ़ीचर बस्ते की जगह बोझ

लेखक: एक जागरूक नागरिक

सुबह का समय है। कुछ बच्चे साफ वर्दी पहनकर स्कूल की बस की ओर दौड़ रहे हैं। उसी सड़क पर एक बच्चा चाय के गिलास सँभाले दुकान की ओर बढ़ता है। उसकी आँखों में नींद है और हाथों में जिम्मेदारियाँ। जिस उम्र में उसे अक्षरों और खेलों से दोस्ती करनी थी, उस उम्र में वह मजदूरी की दुनिया में कदम रख चुका है।

ढाबों, दुकानों और छोटे कारखानों में काम करते बच्चे हमारे आसपास दिखाई देते हैं। हम उनसे सामान मँगवा लेते हैं, पर अक्सर यह नहीं सोचते कि उनकी पढ़ाई कब होती होगी। काम का लंबा समय, थकान और असुरक्षित परिस्थितियाँ उनके स्वास्थ्य तथा सीखने की क्षमता को प्रभावित करती हैं। धीरे-धीरे विद्यालय लौटने का रास्ता और कठिन हो जाता है।

हर बच्चे के पीछे एक जैसी कहानी नहीं होती। कहीं गरीबी है, कहीं परिवार का संकट और कहीं शिक्षा तक पहुँच की बाधाएँ। सस्ते श्रम की माँग इस विवशता को बढ़ाती है। केवल बच्चे को काम से हटा देना पर्याप्त नहीं; उसके परिवार को सहारा और बच्चे को नियमित शिक्षा से जोड़ना भी जरूरी है।

समाज अपनी भूमिका से बच नहीं सकता। हम बच्चों को घरेलू या व्यावसायिक काम पर रखने से इनकार करें। जरूरतमंद परिवारों को उपलब्ध सहायता से जोड़ें और ऐसे बच्चों की स्थिति की सूचना संबंधित बाल सहायता तंत्र को दें। विद्यालयों में स्वागतपूर्ण वातावरण, पढ़ाई में अतिरिक्त मदद और परिवार से संवाद उन्हें टिके रहने में सहायता दे सकते हैं।

बचपन का अर्थ केवल जीवित रहना नहीं, सीखना, खेलना और सपने देखना भी है। अगली बार चाय लाने वाले छोटे हाथ दिखाई दें, तो उनकी मजदूरी के पीछे छिपे अधूरे बचपन को भी पहचानें। उन हाथों में बस्ता लौटाना हम सबकी जिम्मेदारी है।

चरण 3: निष्कर्ष यह फ़ीचर कामकाजी बच्चों की स्थिति का मानवीय चित्र प्रस्तुत करता है और शिक्षा तथा सामाजिक सहयोग के माध्यम से समाधान की दिशा दिखाता है।

त्वरित सुझाव: बाल श्रम पर फ़ीचर में करुणा के साथ कारण और समाधान भी लिखें; केवल भावुक अपील पर्याप्त नहीं है।

---

8. मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ । [8 अंक]

8(क). शीतल वाणी में आग का क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में विरोधी प्रतीक भीतरी मनःस्थिति व्यक्त करते हैं। यहाँ शीतलता वाणी की मधुरता है और आग पीड़ा के ताप के साथ सामाजिक अन्याय तथा रूढ़ियों के प्रति विद्रोह का संकेत है।
- पंक्ति का आशय दिए गए पद्यांश के रोदन, राग और भावनात्मक द्वंद्व से जोड़कर समझना चाहिए।

चरण 1: प्रतीकों का अर्थ कवि की वाणी बाहर से शांत, मधुर और कोमल है। इसी अर्थ में उसे शीतल कहा गया है। आग वास्तविक ज्वाला नहीं, भीतर की प्रखर संवेदना, आक्रोश और विद्रोह का प्रतीक है। जीवन की पीड़ा के साथ सामाजिक रूढ़ियों, विषमता और अन्याय के प्रति असंतोष भी उसकी वाणी में छिपा है। उसकी कोमल अभिव्यक्ति को निष्क्रियता या अन्याय की स्वीकृति नहीं समझना चाहिए।

चरण 2: समग्र आशय कवि अपने भीतर के असंतोष को कठोर स्वर के स्थान पर मधुर काव्यवाणी में अभिव्यक्त करता है। उसकी शांत भाषा में अन्याय और जड़ परंपराओं के विरोध तथा परिवर्तन की चेतना का ताप है। जैसे उसके रोदन में राग समाया है, वैसे ही शीतल वाणी में विद्रोह की आग है। इस प्रकार पंक्ति बाहरी मधुरता और भीतरी प्रखरता का सामंजस्य व्यक्त करती है; इसका अर्थ केवल निजी दुःख तक सीमित नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष शीतल वाणी में आग का तात्पर्य है कि कवि की मधुर और शांत अभिव्यक्ति में पीड़ा के साथ सामाजिक अन्याय, विषमता और रूढ़ियों के विरुद्ध विद्रोह तथा परिवर्तन की प्रखर चेतना छिपी है।

त्वरित सुझाव: शीतल और आग का शाब्दिक अर्थ लिखकर न रुकें; उनके माध्यम से व्यक्त भीतरी और बाहरी द्वंद्व स्पष्ट करें।

8(ख). कवि ने खंडहर का भाग किसे कहा है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खंडहर और प्रासाद परस्पर विरोधी बिंब हैं। इनसे कवि बाहरी वैभव की तुलना अपने पीड़ापूर्ण, किंतु भावसमृद्ध जीवन से करता है।
- उत्तर में पहले खंडहर का संकेत बताएँ और फिर उसके मूल्य का कारण स्पष्ट करें; केवल निर्धनता कह देना आशय को सीमित कर देता है।

चरण 1: खंडहर का भाग किसे कहा गया कवि ने अपने टूटे हुए, दुःख और अभाव से भरे जीवन को खंडहर का भाग कहा है। जैसे खंडहर किसी सुंदर भवन के टूटने का संकेत देता है, वैसे ही यह बिंब जीवन की विफलताओं, बिखरे स्वप्नों और वेदना को व्यक्त करता है। यहाँ किसी वास्तविक जर्जर इमारत के स्वामित्व की बात नहीं है।

चरण 2: इस उपमा का कारण कवि का जीवन बाहरी दृष्टि से उजड़ा हुआ दिखाई दे सकता है, फिर भी उसमें गहरी संवेदनाएँ, प्रेम और आत्मीय अनुभव संचित हैं। उसके रोदन में भी राग है और शांत वाणी में भावों का ताप है। इसलिए यह खंडहर उसके लिए मूल्यवान है; राजाओं के भव्य प्रासाद भी उसकी भावसमृद्धि के सामने निछावर हो सकते हैं। कवि भौतिक वैभव से अधिक अपने अंतर्जगत को महत्त्व देता है।

चरण 3: निष्कर्ष खंडहर का भाग कवि का दुःख और टूटन से भरा निजी जीवन है। वह बाहर से उजड़ा होकर भी भीतर से संवेदनाओं का ऐसा भंडार है जिसका मूल्य राजवैभव से अधिक है।

त्वरित सुझाव: खंडहर की टूटन और प्रासाद के वैभव की तुलना को कवि की आंतरिक भावसमृद्धि से जोड़कर कारण लिखें।

8(ग). राजमहल न्यौछावर होने से क्या आशय है और वे किस पर न्यौछावर होते हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि प्रेम और संवेदना की संपदा को राजसी ऐश्वर्य से अधिक मूल्यवान मानता है।
- खंडहर का बिंब उजड़े जीवन में बची आत्मीयता और स्मृतियों का संकेत है।

चरण 1: न्यौछावर का आशय राजमहल न्यौछावर होने का आशय है कि राजाओं के वैभवशाली प्रासाद भी कवि के पास बचे भावात्मक धन पर समर्पित किए जा सकते हैं। यहाँ महलों का वास्तव में दान किया जाना अभिप्रेत नहीं है; इस कथन से उस धन का असाधारण मूल्य व्यक्त हुआ है।

चरण 2: समर्पण का आधार वे कवि के उस खंडहर के भाग पर न्यौछावर होते हैं जिसमें प्रेम, आत्मीयता और प्रिय स्मृतियों का संसार बचा है। बाहरी दृष्टि से उसका जीवन उजड़ा हुआ लग सकता है, पर उसके भीतर की प्रेम-संपदा इतनी समृद्ध है कि राजसी सुख-सुविधाएँ भी उसके सामने तुच्छ हैं। इसलिए प्रासाद और खंडहर की तुलना बाहरी रूप की नहीं, उनके भावात्मक मूल्य की है।

चरण 3: निष्कर्ष राजमहल कवि के प्रेमपूर्ण, स्मृतिसंपन्न खंडहर के भाग पर न्यौछावर हैं; आशय है कि हृदय की यह संपदा राजसी वैभव से बढ़कर है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले न्यौछावर का लाक्षणिक अर्थ बताएँ, फिर खंडहर में सुरक्षित प्रेम-संपदा से उसका संबंध जोड़ें।

8(घ). 'मेरा जीवन विरुद्धों का सामंजस्य है' – यह बात कवि ने कैसे समझाई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विरुद्धों के सामंजस्य में देखने में विपरीत लगने वाले भाव एक ही व्यक्तित्व में साथ रहते हैं।
- काव्यांश में रोदन–राग, शीतलता–आग और खंडहर–प्रासाद के विरोध उभरते हैं।

चरण 1: दुख और उल्लास का सहअस्तित्व कवि अपने रोदन में भी राग लिए फिरता है। उसके हृदय में पीड़ा है, फिर भी वह उसे संगीत और मधुर अभिव्यक्ति में बदल देता है। इस प्रकार दुख और आनंद परस्पर विरोधी होकर भी उसके जीवन में साथ उपस्थित हैं।

चरण 2: शांति और विद्रोह का संगम उसकी वाणी शीतल है, किंतु उसमें आग भी है। मधुर और शांत अभिव्यक्ति के भीतर तीव्र भाव, असंतोष तथा विद्रोह की शक्ति विद्यमान है। इसी तरह वह उजड़े खंडहर का भाग लेकर भी ऐसी प्रेम-संपदा सँजोए है जिस पर राजमहल न्यौछावर हों। बाहरी अभाव और आंतरिक समृद्धि भी यहाँ एक साथ मिलते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने रोदन में राग, शीतल वाणी में आग तथा खंडहर में राजमहलों से श्रेष्ठ संपदा दिखाकर अपने जीवन को विरुद्ध भावों का सामंजस्य बताया है।

त्वरित सुझाव: काव्यांश से विरोधी शब्दों की जोड़ियाँ चुनें और प्रत्येक जोड़ी में साथ रहने वाले दो भाव स्पष्ट करें।

अथवा

8. अंगना-अंग से लिपटे भी
आतंक अंक पर काँप रहे हैं
धनी, वज्र-गर्जन से बादल ?
त्रस्त नयन मुख ढाँप रहे हैं ।
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ऐ विप्लव के वीर! [8 अंक]

8(क). कौन लोग विलासिता में डूबे हुए हैं ? वे क्यों भयभीत हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में बादल सामाजिक क्रांति के प्रतीक हैं।
- धनी वर्ग का भय अपने ऐश्वर्य और शोषण पर आधारित व्यवस्था के समाप्त होने का भय है।

चरण 1: विलासिता में डूबे लोग समाज के धनी और संपन्न लोग विलासिता में डूबे हुए हैं। वे सुख-सुविधाओं से घिरे हैं तथा अपनी स्त्रियों के अंगों से लिपटकर भोग-विलास में समय बिता रहे हैं। उनके पास संपत्ति और साधन हैं, फिर भी वे निश्चिंत नहीं हैं।

चरण 2: भय का कारण बादल की वज्र जैसी गर्जना उन्हें क्रांति के आगमन का संकेत देती है। वे आशंकित हैं कि यह परिवर्तन उनकी शोषण पर टिकी संपन्नता और सत्ता को नष्ट कर देगा। इसी कारण सुखद आलिंगन में भी उनका आतंक दूर नहीं होता और वे भय से काँपते हुए अपना मुख ढाँप लेते हैं। उनका यह भय सामाजिक परिवर्तन के प्रति संपन्न वर्ग के विरोध को भी उजागर करता है।

चरण 3: निष्कर्ष धनी और संपन्न लोग विलासिता में डूबे हैं। वे बादल की गर्जना में क्रांति की आहट सुनकर अपने ऐश्वर्य और प्रभुत्व के नष्ट होने से भयभीत हैं।

त्वरित सुझाव: धनी लोगों की बाहरी सुख-सुविधाओं और भीतरी भय का अंतर दिखाते हुए गर्जन को क्रांति से जोड़ें।

8(ख). 'विप्लव के वीर' किसे कहा गया है ? क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विप्लव का अर्थ है व्यापक क्रांति या आमूल परिवर्तन।
- बादल का विनाशकारी गर्जन और जीवनदायी वर्षा परिवर्तन के दो पक्ष व्यक्त करते हैं।

चरण 1: संबोधन की पहचान कवि ने बादल को विप्लव के वीर कहा है। यह संबोधन उसे साहसी क्रांतिकारी शक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है। किसान उसी को अधीर होकर पुकार रहा है; इसलिए यहाँ संबोधित वीर कोई मनुष्य नहीं, बादल है।

चरण 2: संबोधन का औचित्य बादल की प्रचंड गर्जना धनी शोषक वर्ग को भयभीत करती है, जबकि उसकी वर्षा किसान की सूखी धरती को सींचकर नए जीवन की आशा जगाती है। इसी प्रकार क्रांति अन्यायपूर्ण व्यवस्था को हिलाकर पीड़ितों के लिए मुक्ति का मार्ग खोलती है। अन्याय को चुनौती देने और नवजीवन लाने के कारण बादल वीर कहलाता है। उसकी शक्ति का लक्ष्य पीड़ित जीवन को नया संबल देना है।

चरण 3: निष्कर्ष बादल को विप्लव के वीर कहा गया है, क्योंकि वह शोषकों को आतंकित करने और शोषित किसान को नवजीवन देने वाली क्रांतिकारी शक्ति का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: पहले संबोधित बादल का नाम लिखें, फिर धनी के भय और किसान की आशा से वीर संबोधन सिद्ध करें।

8(ग). किसान की दशा कैसी हो गई है ? इसका कारण क्या है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में किसान की शारीरिक दुर्बलता उसके आर्थिक शोषण को व्यक्त करती है।
- जीर्ण बाहु और शीर्ण शरीर उसकी क्षीण दशा के प्रत्यक्ष संकेत हैं।

चरण 1: किसान की स्थिति किसान की भुजाएँ जीर्ण और शरीर क्षीण हो गया है। लगातार परिश्रम करने के बावजूद उसे पर्याप्त भोजन तथा जीवन की आवश्यक सुविधाएँ नहीं मिलतीं। उसका शरीर दुर्बल है और उसकी अधीर पुकार बताती है कि वह अपनी दयनीय स्थिति से उबरना चाहता है।

चरण 2: दुर्दशा का कारण इस स्थिति का प्रमुख कारण धनी वर्ग द्वारा उसका शोषण है। किसान उत्पादन करता है, पर उसके श्रम का उचित फल उसे नहीं मिलता। संपन्न वर्ग लाभ और सुख-साधन अपने पास रखता है, जबकि किसान अभाव झेलता है। इसी विषमता के कारण उसकी देह गल गई है और वह बादल के रूप में परिवर्तनकारी शक्ति को बुला रहा है।

चरण 3: निष्कर्ष किसान अत्यंत दुर्बल, जर्जर और अभावग्रस्त हो गया है। धनी वर्ग का शोषण तथा श्रम का उचित प्रतिफल न मिलना उसकी दुर्दशा के कारण हैं।

त्वरित सुझाव: जीर्ण और शीर्ण शब्दों से दशा बताएँ तथा कारण में किसान के श्रम और उसे मिलने वाले फल की असमानता लिखें।

8(घ). बादलों को बुलाने में किसान की अधीरता का कारण स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बादल वर्षा के साथ सामाजिक बदलाव और नई आशा का प्रतीक है।
- किसान की अधीरता उसके लंबे अभाव और शीघ्र मुक्ति की आकांक्षा से जुड़ी है।

चरण 1: जीवनरक्षक वर्षा की आवश्यकता किसान का जीवन खेती पर निर्भर है। बादल की वर्षा से भूमि को जल मिलता है, फसल बढ़ती है और अन्न की आशा जागती है। दुर्बल और अभावग्रस्त किसान अपने जीवन में यह नया संचार चाहता है, इसलिए बादलों के आने की प्रतीक्षा उसके लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

चरण 2: शोषण से मुक्ति की आकांक्षा काव्यांश में किसान बादल को विप्लव के वीर कहकर बुलाता है। इससे स्पष्ट है कि उसकी अधीरता केवल वर्षा के लिए नहीं है; वह उस क्रांतिकारी परिवर्तन की भी प्रतीक्षा कर रहा है जो शोषक व्यवस्था को समाप्त करे। लंबे शोषण से त्रस्त किसान जल्द न्याय, सम्मान और अपने श्रम का फल पाना चाहता है।

चरण 3: निष्कर्ष किसान वर्षा से खेती में नवजीवन और क्रांति से शोषण-मुक्त जीवन की आशा रखता है। अपनी जर्जर दशा से शीघ्र उबरने की चाह उसे बादलों को अधीर होकर बुलाने को प्रेरित करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में बादल के दोनों अर्थ जोड़ें—खेती को जल देने वाला बादल और किसान को मुक्ति देने वाली क्रांति।

9. छोटा मेरा खेत चौकोना
काग़ज़ का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया । [6 अंक]

9(क). खेत और काग़ज़ की तुलना का आधार स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि ने काव्य-सृजन की प्रक्रिया को खेती के रूपक में व्यक्त किया है।
- काग़ज़ और खेत दोनों बीज को विकसित करके फलदायी बनाने का आधार हैं।

चरण 1: आकार की समानता खेत और काग़ज़ के पन्ने की तुलना का एक आधार उनका चौकोना आकार है। कवि अपने छोटे-से काग़ज़ के पन्ने को खेत कहता है। जैसे किसान एक सीमित भूखंड पर खेती करता है, वैसे ही कवि पन्ने की सीमित जगह पर अपनी रचना का संसार विकसित करता है।

चरण 2: सृजन की समानता अधिक गहरा आधार दोनों का सृजन-स्थल होना है। खेत में बीज बोया जाता है और उससे फसल उपजती है; काग़ज़ पर किसी क्षण जागा भाव या विचार बीज बनकर पड़ता है और कविता का रूप लेता है। खेत अन्न देता है, जबकि काग़ज़ पर उगी रचना पाठक को भाव, विचार और आनंद देती है। इस तरह दोनों जीवन को समृद्ध करने वाली उपज के आधार बनते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष खेत और काग़ज़ दोनों चौकोने हैं और सृजन के आधार हैं। खेत में बीज से फसल तथा काग़ज़ पर भाव-विचार के बीज से कविता पैदा होती है।

त्वरित सुझाव: तुलना में आकार की समानता के बाद बीज–भाव और फसल–कविता का संबंध जरूर स्पष्ट करें।

9(ख). अंधड़ और बीज का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि ने खेती की प्रक्रिया के माध्यम से कविता की रचना-प्रक्रिया को मूर्त रूप दिया है।
- प्रतीक के अर्थ को उसके प्रसंग से समझना चाहिए; यहाँ प्राकृतिक क्रियाएँ मन के भीतर होने वाले सृजन का संकेत देती हैं।

चरण 1: अंधड़ का प्रतीकार्थ अंधड़ मन में अचानक उमड़ने वाली भावनाओं, विचारों अथवा प्रेरणा के तीव्र आवेग का प्रतीक है। जैसे

अंधड़ बाहर के वातावरण को आंदोलित करता है, वैसे ही कोई अनुभव कवि के अंतर्मन को झकझोर देता है और उसे रचना के लिए प्रेरित करता है। यहाँ इसका आशय केवल विनाशकारी आँधी से नहीं है।

चरण 2: बीज का प्रतीकार्थ बीज उस अनुभूति, भाव या विचार का प्रतीक है, जो प्रेरणा के किसी क्षण में कवि के मन में जन्म लेता है। यही सूक्ष्म अनुभूति आगे कल्पना और अभिव्यक्ति के सहारे कविता के रूप में विकसित होती है। इसलिए क्षण का बीज रचना का आरंभिक सृजनात्मक आधार है।

चरण 3: निष्कर्ष अंधड़ भावनात्मक प्रेरणा का तीव्र आवेग है और बीज कविता को जन्म देने वाली क्षणिक अनुभूति अथवा मूल विचार है।

त्वरित सुझाव: अंधड़ को प्रेरणा और बीज को मूल अनुभूति से जोड़कर दोनों प्रतीकों का संबंध स्पष्ट कीजिए।

9(ग). काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की विशेषता बताते समय काव्यांश से उसका उदाहरण देना उत्तर को स्पष्ट बनाता है।
- इस काव्यांश में सरल शब्दावली के भीतर रूपक और प्रतीकों द्वारा सृजन का गहरा अर्थ व्यक्त हुआ है।

चरण 1: सरल और सहज भाषा काव्यांश की भाषा सरल, सहज और बोलचाल के निकट है। खेत, काग़ज़, पन्ना और बीज जैसे परिचित शब्द प्रयुक्त हुए हैं। छोटे और सीधे वाक्यों के कारण पाठक दृश्य को आसानी से समझ लेता है। कठिन अमूर्त विषय अर्थात कविता की रचना-प्रक्रिया भी रोजमर्रा की भाषा में सुलभ हो जाती है।

चरण 2: बिंबात्मक और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति भाषा चित्रात्मक तथा प्रतीकात्मक है। काग़ज़ के चौकोर पन्ने को छोटा खेत कहकर उसमें खेत का बिंब उभारा गया है। अंधड़ भावों के आवेग का और बीज रचना के मूल विचार का संकेत देता है। खेत और काग़ज़ के रूपक से थोड़े शब्दों में बाहरी दृश्य तथा भीतरी सृजन दोनों व्यक्त होते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की दो प्रमुख भाषागत विशेषताएँ सरल-सहज शब्दावली तथा बिंबात्मक-प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति हैं।

त्वरित सुझाव: दो विशेषताएँ अलग लिखिए और प्रत्येक के साथ काव्यांश का एक उपयुक्त शब्द या उदाहरण जोड़िए।

अथवा

9. आँगन में ठुनक रहा है ज़िदयाया है
बालक तो हई चाँद पर ललचाया है
दर्पण उसे दे के कह रही है माँ
देख आईने में चाँद उतर आया है । [6 अंक]

9(क). काव्यांश की भाषा की लाक्षणिकता और लोकतत्त्व पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लाक्षणिक भाषा में शब्द सीधे अर्थ से आगे बढ़कर प्रसंगानुसार विशेष अर्थ का संकेत देते हैं।
- लोकतत्त्व सामान्य जनजीवन की भाषा, रीति, व्यवहार और अनुभव के काव्यात्मक रूप में प्रकट होता है।

चरण 1: भाषा की लाक्षणिकता माँ का कहना कि आईने में चाँद उतर आया है, लाक्षणिक और कल्पनापूर्ण अभिव्यक्ति है। चाँद सचमुच धरती पर या दर्पण में नहीं उतरता; दर्पण में उसका प्रतिबिंब दिखाई देता है। माँ उसी प्रतिबिंब को चाँद का उतर आना कहकर बालक की

कल्पना के अनुरूप उसकी जिद शांत करती है।

चरण 2: लोकतत्त्व का परिचय आँगन में चाँद माँगते हुए बच्चे का ठुनकना और माँ का दर्पण दिखाकर उसे बहलाना घरेलू लोकजीवन का सहज दृश्य है। ठुनकना, ज़िदयाया और ललचाया जैसे बोलचाल के शब्द लोकभाषा की आत्मीयता लाते हैं। मातृवात्सल्य और बालहठ का परिचित अनुभव कविता को जनजीवन से जोड़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष चाँद का आईने में उतरना लाक्षणिक अभिव्यक्ति है; आँगन, बालहठ, माँ का बहलाना और बोलचाल की शब्दावली इसके लोकतत्त्व हैं।

त्वरित सुझाव: चाँद के प्रतिबिंब से लाक्षणिकता और माँ-बच्चे के घरेलू व्यवहार से लोकतत्त्व समझाइए।

9(ख). यह किस छंद में लिखा गया है तथा उसका क्या लक्षण है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रुबाई उर्दू-फारसी काव्य परंपरा का चार पंक्तियों वाला मुक्तक छंद है।
- इसकी तुक-योजना को पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति की अंतिम ध्वनियों से पहचाना जा सकता है।

चरण 1: छंद की पहचान प्रस्तुत काव्यांश रुबाई छंद में लिखा गया है। यह चार पंक्तियों की स्वतंत्र और पूर्ण भाव व्यक्त करने वाली काव्यरचना है। यहाँ बच्चे की चाँद पाने की जिद और माँ द्वारा उसे दर्पण दिखाकर संतुष्ट करने का पूरा दृश्य इन्हीं चार पंक्तियों में समा गया है।

चरण 2: छंद के लक्षण और उदाहरण रुबाई की पहली, दूसरी और चौथी पंक्तियाँ तुकांत होती हैं, जबकि तीसरी पंक्ति की तुक इनसे भिन्न रहती है। इस काव्यांश में ज़िदयाया है, ललचाया है और आया है में तुक-साम्य है; तीसरी पंक्ति माँ पर समाप्त होती है। इस प्रकार इसकी तुक-योजना पहली-दूसरी-चौथी समान तुक वाली है। रुबाई में निर्धारित बहर के अनुसार लय का निर्वाह भी किया जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष यह रुबाई छंद है। इसकी चार पंक्तियों में पहली, दूसरी और चौथी तुकांत तथा तीसरी भिन्न तुक वाली होती है।

त्वरित सुझाव: चारों पंक्तियों के अंतिम शब्द देखकर पहली-दूसरी-चौथी समान तुक वाली तुक-योजना पहचानिए; तीसरी पंक्ति को अलग रखिए।

9(ग). काव्यांश का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में कविता के मानवीय अनुभव और उससे उत्पन्न संवेदना को स्पष्ट किया जाता है।
- यहाँ बालसुलभ जिद और माँ का स्नेह घरेलू जीवन के सहज चित्र में प्रकट हुए हैं।

चरण 1: बालमन की सहजता आँगन में बच्चा चाँद को पाने की जिद कर रहा है। उसकी दृष्टि में सुंदर और आकर्षक चाँद भी हाथ में लेने योग्य वस्तु है। वह वास्तविक दूरी और असंभवता से अनजान होकर ठुनकता है। यह प्रसंग बालमन की निश्छलता, उत्सुकता और कल्पनाशीलता का अत्यंत स्वाभाविक चित्र प्रस्तुत करता है।

चरण 2: मातृवात्सल्य और सूझबूझ माँ बच्चे को डाँटने के स्थान पर उसकी मनःस्थिति समझती है। वह दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाकर कहती है कि चाँद नीचे उतर आया है। उसके इस उपाय में स्नेह, धैर्य और बालमनोविज्ञान की सहज समझ दिखाई देती है। साधारण घरेलू घटना माँ-बच्चे के आत्मीय संबंध का मार्मिक चित्र बन जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष बालहठ की निष्कपटता और माँ के स्नेहपूर्ण चातुर्य से काव्यांश में वात्सल्य, आत्मीयता और सहज सौंदर्य उत्पन्न हुआ है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य लिखते समय बच्चे की निश्छल जिद और माँ के स्नेहपूर्ण उपाय दोनों को स्थान दीजिए।

10(क). 'सबसे तेज़ बौछारें गईं, भादौ गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलोक धन्वा की कविता पतंग में वर्षा के बाद शरद ऋतु के आगमन का सजीव चित्रण है।
- प्रकृति के रंग, प्रकाश और गति के बिंब बच्चों के पतंग उड़ाने के उत्साह की पृष्ठभूमि बनाते हैं।

चरण 1: वर्षा का अंत और शरद का आगमन तेज़ बौछारों और भादों के बीत जाने पर वर्षा ऋतु का प्रचंड रूप समाप्त हो गया है। अब शरद ऋतु आ गई है। आकाश खुला और साफ दिखाई देता है। वर्षा का घिरा हुआ वातावरण हटने से प्रकृति में उजास, ताजगी और विस्तार का अनुभव होता है। यह परिवर्तन बच्चों को बाहर आने और खुले आकाश में पतंग उड़ाने का अवसर देता है।

चरण 2: सुबह की लालिमा और शरद की गतिशीलता कवि ने सवेरे की लालिमा की तुलना खरगोश की आँखों की लाली से की है। शरद को मानवीय रूप में चित्रित किया गया है: वह नई चमकीली साइकिल तेज़ चलाता, घंटी बजाता और पुलों को पार करता हुआ आता है। इस चित्र में नए मौसम की चमक, गति और उत्साह एक साथ उभरते हैं। चारों ओर फैला उजास और शरद की यह सक्रिय उपस्थिति वर्षा के बाद का सुखद परिवर्तन व्यक्त करते हैं।

चरण 3: धरती और आकाश का आकर्षक रूप कवि के अनुसार चमकीले इशारे बच्चों को बुला रहे हैं। नए मौसम में आकाश इतना कोमल और आकर्षक लगता है मानो बच्चे उसे छूकर अनुभव कर सकें। धरती भी बच्चों के पाँवों के पास घूमती हुई प्रतीत होती है। इस प्रकार वर्षा के बाद की स्वच्छ, कोमल और उजली प्रकृति बच्चों के उत्साह तथा उनकी उन्मुक्त गतिविधियों के अनुकूल हो गई है।

चरण 4: निष्कर्ष भादों के बाद शरद की लालिमा भरी सुबह, चमकीले इशारों और मुलायम खुले आकाश से प्रकृति ताज़ा और उल्लासपूर्ण हो गई है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में ऋतु-परिवर्तन के साथ सुबह की लालिमा, शरद की साइकिल, घंटी और मुलायम आकाश के बिंब जोड़िए।

10(ख). 'चिड़िया और फूल के बहाने' कविता क्या है ? कुँअर नारायण ने इन संबंधों को कैसे व्यक्त किया है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता की असीम रचनात्मक स्वतंत्रता और चिड़िया तथा फूल के माध्यम से उसका बोध।
- उत्तर में पाठ के प्रसंग और कथन के आशय का परस्पर संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: चिड़िया के बहाने कविता का अर्थ कुँअर नारायण कविता को कल्पना की ऐसी उड़ान मानते हैं जो बाहर और भीतर की सीमाएँ पार करती है। चिड़िया उड़ती अवश्य है, पर उसकी उड़ान की भौतिक सीमा होती है। कविता की उड़ान मनुष्य के मन, अनुभव और कल्पना में होती है; इसलिए वह स्थान और समय की बाधाएँ लाँघ सकती है। कवि का प्रश्न कि कविता की उड़ान चिड़िया क्या जाने, इसी अंतर को उभारता है।

चरण 2: फूल के बहाने कविता का विस्तार फूल खिलकर सुंदरता और सुगंध फैलाता है, किंतु उसका जीवन सीमित होता है और वह अंततः मुरझा जाता है। कविता का खिलना भावों और अर्थों का विकसित होना है। उसका प्रभाव फूल की पंखुड़ियों और रंगों से आगे मनुष्य के अंतर्मन तक पहुँचता है। वह नए पाठकों और नए संदर्भों में फिर अर्थवान होती है, इसलिए उसका सौंदर्य किसी फूल की तरह निश्चित अवधि में समाप्त नहीं हो जाता।

चरण 3: इन संबंधों का आशय चिड़िया की उड़ान और फूल के खिलने से कविता का संबंध समानता और अंतर दोनों के आधार पर बनता है। उड़ना और खिलना कविता की सहज सृजनशीलता के रूपक हैं; पर कवि इन्हीं के सहारे बताते हैं कि कविता की संभावनाएँ उनके भौतिक रूपों से व्यापक हैं। कविता को किसी सीमित अर्थ, स्थान या उपयोग में बाँधा नहीं जा सकता।

चरण 4: निष्कर्ष कविता कल्पना की असीम उड़ान और भावों का अमर खिलना है; चिड़िया तथा फूल के बहाने कवि उसकी व्यापकता व्यक्त करते हैं।

त्वरित सुझाव: उड़ान के साथ भौतिक सीमा और खिलने के साथ मुरझाने की सीमा का अंतर अवश्य स्पष्ट करें।

10(ग). "नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई" तथा "नारि हानि विसेष छति नाहीं" जैसे कथनों के आधार पर नारी के प्रति तुलसी के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राम के शोकपूर्ण कथनों का प्रसंग तथा मध्यकालीन नारी-दृष्टि का विवेचन।
- उत्तर में पाठ के प्रसंग और कथन के आशय का परस्पर संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: कथनों का प्रसंग समझना ये कथन लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम के विलाप में आए हैं। अपने प्रिय भाई को खो देने की आशंका से राम अत्यंत व्याकुल हैं। वे नारी के लिए भाई गँवाने की बात कहकर अपने निर्णय के प्रति अपराधबोध व्यक्त करते हैं। यहाँ तत्काल प्रसंग भाई के प्रति अगाध स्नेह और संभावित वियोग की पीड़ा का है; इसे शांत मन से दिया गया सामान्य सिद्धांत समझना उचित नहीं होगा।

चरण 2: नारी के प्रति दृष्टिकोण नारी की हानि को विशेष क्षति न मानने की बात में स्त्री की अपेक्षा पुरुष-भ्राता को अधिक महत्त्व देने वाली पितृसत्तात्मक मानसिकता दिखाई देती है। स्त्री के स्वतंत्र व्यक्तित्व और उसके वियोग के मूल्य की उपेक्षा होती है। इन कथनों में तुलसी के युग की सामाजिक मान्यताओं का प्रभाव है, जहाँ पत्नी की तुलना में भ्रातृ-संबंध को यहाँ अधिक दुर्लभ और मूल्यवान बताया गया है। आधुनिक समानतामूलक दृष्टि से यह स्त्री के प्रति अवमूल्यनकारी धारणा है।

चरण 3: प्रसंग और मूल्यांकन का संतुलन कवि राम की शोकाकुल मनोदशा और भ्रातृप्रेम की तीव्रता व्यक्त कर रहे हैं। अतः इन पंक्तियों में प्रकट नारी-दृष्टि की सीमा पहचानते हुए भी राम की करुण दशा को ध्यान में रखना चाहिए। केवल इन्हीं कथनों से तुलसी के पूरे साहित्य में नारी के प्रति उनकी समस्त दृष्टि का अंतिम निर्णय करना उचित नहीं है।

चरण 4: निष्कर्ष इन कथनों में तत्कालीन पितृसत्तात्मक दृष्टि से स्त्री का महत्त्व कम आँका गया है; साथ ही वे राम के असह्य भ्रातृशोक में कहे गए हैं।

त्वरित सुझाव: पहले लक्ष्मण की मूर्च्छा का प्रसंग लिखें, फिर नारी के अवमूल्यन और शोकजनित कथन का संबंध स्पष्ट करें।

11. रात्रि की विभीषिका को सिर्फ़ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी । पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस खयाल से ढोलक बजाता हो, किंतु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी । बूढ़े-बच्चे जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था । स्पंदन-शक्ति-शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी । अवश्य ही ढोलक की आवाज़ में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी, मृत्यु से वे डरते नहीं थे । [8 अंक]

11(क). पहलवान की ढोलक किसे ललकारती थी और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश से चुनौती के लक्ष्य और उसके कारण की पहचान।
- उत्तर में पाठ के प्रसंग और कथन के आशय का परस्पर संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: ढोलक की चुनौती का लक्ष्य पहलवान की ढोलक रात्रि की विभीषिका को ललकारती थी। महामारी से त्रस्त गाँव में रात का अंधकार केवल प्राकृतिक अँधेरा नहीं था; उसके साथ मृत्यु का भय, रोग की पीड़ा और असहायता जुड़ी थी। गद्यांश का आरंभ ही स्पष्ट करता है कि इस भयावह वातावरण को चुनौती देने वाली आवाज़ केवल ढोलक की थी।

चरण 2: चुनौती का कारण और अर्थ गाँव के लोग औषधि, उपचार और पथ्य से वंचित तथा लगभग निष्प्राण हो चुके थे। ऐसे समय ढोलक की लय उनमें संजीवनी जैसी मानसिक शक्ति भरती थी। वह भय और निराशा के सामने साहस की आवाज़ बनती थी। इसीलिए उसका बजना रात्रि की विभीषिका को ललकारना कहा गया है; यह रोग से मुक्ति का दावा नहीं, संकट में मनोबल बनाए रखने की भूमिका

है।

चरण 3: निष्कर्ष ढोलक महामारीग्रस्त रात के भय और मृत्यु की विभीषिका को चुनौती देती थी, क्योंकि उसकी लय असहाय लोगों में साहस और जीवन-शक्ति जगाती थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में किसे का उत्तर रात्रि की विभीषिका और क्यों का उत्तर मानसिक साहस से दें।

11(ख). मरणासन्न लोगों पर ढोलक का क्या प्रभाव पड़ता था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मरणासन्न लोगों पर संगीत के मानसिक प्रभाव का बोध।
- उत्तर में पाठ के प्रसंग और कथन के आशय का परस्पर संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: शिथिल मन और शरीर में चेतना ढोलक की आवाज़ मरणासन्न लोगों में संजीवनी शक्ति भरती थी। उनकी शक्तिहीन आँखों के सामने दंगल का दृश्य उभर आता और स्पंदनहीन स्नायुओं में मानो बिजली दौड़ जाती थी। ये अभिव्यक्तियाँ उनके भीतर उठती चेतना, उत्साह और साहस को बताती हैं। असहाय अवस्था में भी उन्हें जीवन के संघर्ष और शक्ति का अनुभव होता था।

चरण 2: मृत्यु के भय से मुक्ति ढोलक बुखार नहीं हटाती थी और महामारी का नाश भी नहीं कर सकती थी। उसका प्रभाव मानसिक था: लोग मृत्यु से डरते नहीं थे और अंतिम समय उनका मन भय तथा व्याकुलता से मुक्त रहता था। लेखक का आशय यह है कि संगीत उन्हें मृत्यु के सामने धैर्य देता था। इसे शारीरिक रोग का उपचार समझना गद्यांश की बात को बदल देना होगा।

चरण 3: निष्कर्ष ढोलक मरणासन्न लोगों में चेतना और साहस भरती थी तथा मृत्यु का भय घटाकर उन्हें अंतिम क्षणों में मानसिक शांति देती थी।

त्वरित सुझाव: ढोलक के प्रभाव को मनोबल और निर्भयता तक रखें; उसे बीमारी का उपचार न बताएँ।

11(ग). लेखक ने दंगल के दृश्य की चर्चा किस उद्देश्य से की है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दंगल के बिंब द्वारा जिजीविषा और मनोबल का प्रभाव स्पष्ट करना।
- उत्तर में पाठ के प्रसंग और कथन के आशय का परस्पर संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: दंगल के दृश्य का संकेत दंगल शक्ति, उत्साह और संघर्ष का दृश्य है। ढोलक सुनकर गाँव के बूढ़े, बच्चे और जवान अपनी रोगग्रस्त अवस्था से क्षणभर ऊपर उठते हैं तथा उनकी आँखों के आगे वही ऊर्जापूर्ण दृश्य नाचने लगता है। लेखक इस दृश्य की चर्चा करके ढोलक की आवाज़ से जागती सक्रियता और जीवन-स्मृति को मूर्त रूप देता है।

चरण 2: सजीव बिंब का उद्देश्य महामारी ने लोगों की शारीरिक शक्ति लगभग समाप्त कर दी थी। उसके विपरीत दंगल का बिंब जीवट और प्रतिरोध का अनुभव कराता है। यह विरोध ढोलक की संजीवनी भूमिका को प्रभावशाली बनाता है: निर्बल शरीर वाले लोग भी भीतर से साहस अनुभव करते हैं। उद्देश्य वास्तविक कुश्ती होने का वर्णन करना नहीं, संगीत से जागती मानसिक शक्ति और जिजीविषा दिखाना है।

चरण 3: निष्कर्ष दंगल के दृश्य से लेखक दिखाता है कि ढोलक निर्बल और निराश लोगों में संघर्ष की भावना, उत्साह तथा जीने का साहस जगा देती थी।

त्वरित सुझाव: दंगल को शक्ति और संघर्ष का बिंब मानकर उसे महामारी से आई निर्बलता से जोड़ें।

11(घ). महामारी की सर्वनाशक शक्ति के सामने ढोलक की भूमिका समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महामारी के सामने ढोलक की सीमा और मानवीय महत्त्व का विवेचन।
- उत्तर में पाठ के प्रसंग और कथन के आशय का परस्पर संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: ढोलक की वास्तविक सीमा गद्यांश स्पष्ट कहता है कि ढोलक की आवाज़ में न बुखार हटाने का गुण था, न महामारी की सर्वनाशक शक्ति रोकने की क्षमता। इसलिए उसकी भूमिका चिकित्सा या रोगनिवारण की नहीं थी। औषधि और उपचार से वंचित लोगों की भौतिक असहायता उसके बजने मात्र से समाप्त नहीं हो जाती थी। इस सीमा को समझना आवश्यक है।

चरण 2: मानसिक सहारा और प्रतिरोध फिर भी ढोलक की लय लोगों में संजीवनी जैसी शक्ति भरती थी। वह मृत्यु की आतंककारी छाया के बीच साहस, उत्साह और धैर्य देती थी। मरते हुए लोग भयभीत नहीं होते और अंतिम क्षणों में उन्हें मानसिक राहत मिलती थी। इस प्रकार महामारी के विनाश के सामने ढोलक मानवीय मनोबल का सहारा तथा निराशा के विरुद्ध जीवन की आवाज़ बनती है।

चरण 3: निष्कर्ष ढोलक महामारी को रोक नहीं सकती थी, किंतु वह भय और निराशा को कम करके रोगियों को साहस तथा मानसिक शांति देती थी।

त्वरित सुझाव: दो बातें साथ लिखें: महामारी रोकने में असमर्थता और मृत्यु के भय के सामने मनोबल का सहारा।

अथवा

11. भारतीय कला और सौन्दर्यशास्त्र को कई रसों का पता है, उनमें से कुछ रसों का किसी कलाकृति में साथ-साथ पाया जाना श्रेयस्कर भी माना गया है, जीवन में हर्ष और विषाद आते रहते हैं यह संसार की सारी सांस्कृतिक परंपराओं को मालूम है, लेकिन करुणा का हास्य में बदल जाना एक ऐसे रस-सिद्धान्त की माँग करता है जो भारतीय परंपराओं में नहीं मिलता । 'रामायण' और 'महाभारत' में जो हास्य है वह दूसरों पर है और अधिकांशतः वह परसंताप से प्रेरित है । जो करुणा है वह अक्सर सद्व्यक्तियों के लिए और कभी-कभार दुष्टों के लिए है । संस्कृत नाटकों में जो विदूषक है वह राजव्यक्तियों से कुछ बदतमीजियाँ अवश्य करता है, किंतु करुणा और हास्य का सामंजस्य उसमें भी नहीं है । अपने ऊपर हँसने और दूसरों में भी वैसा ही माद्दा पैदा करने की शक्ति भारतीय विदूषक में कुछ कम ही नज़र आती है । [8 अंक]

11(क). भारत में हास्य रस को परसंताप से प्रेरित क्यों कहा गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- परसंताप का अर्थ दूसरे के कष्ट या असहज स्थिति से मिलने वाला आनंद है।
- गद्यांश में स्वयं पर हँसने और दूसरों पर हँसने का अंतर बताया गया है।

चरण 1: परसंताप का आशय परसंताप में किसी दूसरे की पीड़ा, कमजोरी या अपमानजनक दशा को देखकर आनंद लिया जाता है। ऐसा हास्य सामने वाले के प्रति सहानुभूति के स्थान पर उसके उपहास पर आधारित होता है। इसलिए यहाँ हँसी का आधार अपना आत्मनिरीक्षण नहीं, दूसरे की स्थिति बनती है।

चरण 2: गद्यांश से कारण स्पष्ट करना लेखक के अनुसार रामायण और महाभारत में मिलने वाला हास्य प्रायः दूसरों पर किया गया है। उसमें दूसरों के दुःख अथवा उनकी असंगत स्थिति पर हँसने की प्रवृत्ति प्रमुख है। अपने ऊपर हँसकर सबके भीतर समान मानवीय अनुभव जगाने की शक्ति कम दिखाई देती है। इसी कारण ऐसे हास्य को अधिकांशतः परसंताप से प्रेरित कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष भारत की उक्त परंपरा में हास्य प्रायः दूसरों की पीड़ा या दुर्बलता पर हँसने से उत्पन्न होता है; इसलिए लेखक उसे परसंताप से प्रेरित कहता है।

त्वरित सुझाव: परसंताप का अर्थ बताकर उसे दूसरों पर हँसने की प्रवृत्ति से जोड़ें।

11(ख). करुणा और हास्य का अभाव भारतीय परंपराओं के साथ क्यों नहीं दिखाई देता ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश भारतीय परंपरा में करुण और हास्य, दोनों रसों की पहचान स्वीकार करता है।
- दो रसों की अलग-अलग उपस्थिति और उनका एक ही अनुभव में सामंजस्य भिन्न बातें हैं।

चरण 1: प्रश्न का संदर्भ समझना भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र अनेक रसों को पहचानते हैं। गद्यांश कहता है कि किसी कलाकृति में कई रसों का साथ-साथ होना भी श्रेयस्कर माना गया है। जीवन में हर्ष और विषाद दोनों आते हैं; इसलिए भारतीय परंपराओं में करुणा और हास्य की अलग-अलग उपस्थिति स्वाभाविक है।

चरण 2: उपस्थिति और सामंजस्य का अंतर रामायण और महाभारत में हास्य के साथ करुणा भी है, पर दोनों के पात्र और आधार अलग हैं। हास्य प्रायः दूसरों पर केंद्रित है, जबकि करुणा सद्व्यक्तियों तथा कभी-कभी दुष्टों के लिए है। लेखक की आपत्ति रसों के पूर्ण अभाव से नहीं, करुणा के हास्य में बदलने वाले सहज सामंजस्य की कमी से है। संस्कृत नाटकों के विदूषक में भी यही कमी बताई गई है।

चरण 3: निष्कर्ष भारतीय परंपरा जीवन के हर्ष-विषाद और अनेक रसों को स्वीकार करती है, इसलिए करुणा और हास्य दोनों उपस्थित हैं; किंतु उनका परस्पर रूपांतरण और सामंजस्य कम दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: दोनों रसों की उपस्थिति बताएं, फिर करुणा के हास्य में बदलने की कमी स्पष्ट करें।

11(ग). भारतीय सौन्दर्यशास्त्र में सामान्यतः करुणा के पात्र कौन हैं और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में सामान्य प्रवृत्ति और उसके अपवाद, दोनों का ध्यान रखना चाहिए।
- गद्यांश सद्व्यक्तियों को प्रमुख और दुष्टों को कभी-कभार करुणा का पात्र बताता है।

चरण 1: प्रमुख पात्र पहचानना भारतीय सौंदर्यशास्त्र में सामान्यतः सद्व्यक्ति करुणा के पात्र हैं। गद्यांश में स्पष्ट है कि करुणा अक्सर सद्व्यक्तियों के लिए होती है। उनके कष्ट और विपत्ति पाठक या दर्शक में दुःख तथा सहानुभूति जगाते हैं। इस प्रकार करुणा का संबंध पीड़ित पात्र के प्रति संवेदना से है।

चरण 2: कारण और अपवाद स्पष्ट करना सद्व्यक्तियों के प्रति दर्शक का सद्भाव रहता है; इसलिए उनके दुःख से वह द्रवित होता है। गद्यांश कभी-कभार दुष्टों के लिए भी करुणा की संभावना स्वीकार करता है। अतः उत्तर में केवल सद्व्यक्तियों का नाम लेना ही पर्याप्त नहीं, उनकी दुःखपूर्ण दशा से उत्पन्न सहानुभूति भी बतानी चाहिए। दुष्टों को सर्वथा करुणा से बाहर बताना पाठ के विपरीत होगा।

चरण 3: निष्कर्ष सामान्यतः सद्व्यक्ति करुणा के पात्र हैं, क्योंकि उनके दुःख पर सहानुभूति उत्पन्न होती है। कभी-कभी दुष्टों की दशा भी करुणा जगा सकती है।

त्वरित सुझाव: अक्सर और कभी-कभार के अंतर से मुख्य पात्र तथा अपवाद अलग-अलग पहचानें।

11(घ). विदूषक का क्या तात्पर्य है ? भारतीय विदूषक की विशेषता क्या बताई गई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विदूषक नाटक में विनोद और हास्य उत्पन्न करने वाला पात्र होता है।
- गद्यांश विदूषक के बाहरी उपहास और आत्महास्य की क्षमता में अंतर करता है।

चरण 1: विदूषक का अर्थ विदूषक संस्कृत नाटकों का वह हास्यप्रधान पात्र है जो अपने कथन और व्यवहार से दर्शकों को हँसाता है। प्रस्तुत गद्यांश में उसका उल्लेख भारतीय हास्य-परंपरा की प्रकृति समझाने के लिए किया गया है। उसके कार्य को केवल मनोरंजन तक सीमित न रखकर लेखक उसके हास्य के आधार पर विचार करता है।

चरण 2: बताई गई विशेषता भारतीय विदूषक राजव्यक्तियों से कुछ बदतमीजियाँ करके हास्य पैदा करता है। पर उसमें करुणा और हास्य का सामंजस्य नहीं मिलता। अपने ऊपर हँसने तथा दूसरों में भी अपने ऊपर हँस सकने का माद्दा पैदा करने की शक्ति अपेक्षाकृत कम दिखाई देती है। लेखक ने इसी सीमित आत्महास्य को उसके चरित्र की विशेषता के रूप में रेखांकित किया है।

चरण 3: निष्कर्ष विदूषक हास्य उत्पन्न करने वाला नाटकीय पात्र है। भारतीय विदूषक राजव्यक्तियों पर व्यंग्य करता है, किंतु उसमें करुणा-हास्य का सामंजस्य और आत्महास्य की शक्ति कम है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के पहले भाग में अर्थ और दूसरे में गद्यांश की बताई सीमा अवश्य लिखें।

12(क). 'भक्तिन में दुर्गुणों का अभाव नहीं ।' किन्हीं तीन दुर्गुणों का उल्लेख कर कथन को प्रतिपादित कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में गुणों के साथ व्यवहारगत कमजोरियों के प्रमाण भी देखने चाहिए।
- भक्तिन के प्रसंगों में धन छिपाना, बात बदलना और अपनी बात मनवाना प्रमुख कमजोरियाँ हैं।

चरण 1: धन को अपने अधिकार में रखना भक्तिन को इधर-उधर पड़े पैसे दिखाई देते तो वह उन्हें मटकी में रख देती थी। वह इस व्यवहार को चोरी नहीं मानती थी। उसका तर्क था कि पैसे सँभालकर रखना उसकी जिम्मेदारी है। फिर भी बिना पूछे किसी दूसरे का धन अपने पास रख लेना उसके चरित्र की एक कमजोरी है। लेखिका इस प्रसंग से उसकी स्वामित्व-बुद्धि और अपने आचरण को उचित ठहराने की प्रवृत्ति दिखाती हैं।

चरण 2: सुविधा के लिए बात बदलना भक्तिन बात को अपनी सुविधा के अनुरूप बदल देती थी। लेखिका की अप्रसन्नता से बचने के लिए वह वास्तविक बात को ढकती या बदलकर प्रस्तुत करती थी। वह इसे झूठ नहीं मानती थी, क्योंकि उसके अनुसार स्वामी को प्रसन्न रखने के लिए ऐसा करना अनुचित नहीं था। इससे उसकी तर्क करने की क्षमता तो दिखती है, पर साथ ही सत्य को अपने लाभ के अनुसार मोड़ने का दुर्गुण भी प्रकट होता है।

चरण 3: अपनी इच्छा दूसरों पर थोपना भक्तिन अपने को सदा सही मानकर दूसरों को अपनी इच्छा के अनुसार चलाना चाहती थी। लेखिका के भोजन और दिनचर्या तक पर वह अपने ढंग का प्रभाव डालती थी। दूसरों की राय के अनुसार स्वयं बदलने के बजाय उन्हें बदलने की यह हठधर्मिता उसका तीसरा दुर्गुण है। इन कमजोरियों के बावजूद उसकी सेवा और निष्ठा बनी रहती है; अतः पाठ में उसका चित्रण एक वास्तविक मनुष्य के रूप में हुआ है।

चरण 4: निष्कर्ष बिना पूछे पैसे अपने पास रखना, सुविधा के लिए बात बदलना और अपनी इच्छा दूसरों पर थोपना भक्तिन की तीन प्रमुख कमजोरियाँ हैं। इसलिए उसमें दुर्गुणों का पूर्ण अभाव नहीं कहा जा सकता।

त्वरित सुझाव: तीन अलग दुर्गुण लिखें और हर एक को भक्तिन के किसी व्यवहार से प्रमाणित करें।

12(ख). जैनेन्द्र कुमार ने बाज़ार का जादू किसे कहा है और उससे बचने का उपाय क्या बताया है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का जादू वस्तुओं की चमक-दमक से पैदा होने वाला खरीदने का मोह है।
- लेखक आवश्यकता के ज्ञान और मन के संयम को अनावश्यक खरीदारी से बचने का आधार मानता है।

चरण 1: बाज़ार के जादू का अर्थ जैनेन्द्र कुमार ने बाज़ार की चमक-दमक और सजी हुई वस्तुओं के उस आकर्षण को बाज़ार का जादू कहा है जो मनुष्य को अनावश्यक वस्तुएँ खरीदने के लिए उकसाता है। वस्तुएँ देखकर उसे लगने लगता है कि उसके पास बहुत कुछ नहीं है और इन सबको लेने पर ही जीवन सुखी होगा। इस मोह में वह अपनी वास्तविक जरूरत भूल जाता है तथा खरीदारी को तृप्ति का साधन मानने लगता है।

चरण 2: जादू की प्रभावकारी स्थिति यह जादू तब विशेष रूप से प्रभाव डालता है जब व्यक्ति के पास खर्च करने को धन हो, पर मन में अपनी जरूरत का स्पष्ट ज्ञान न हो। खाली मन और भरी जेब उसे अनेक वस्तुओं की ओर खींचते हैं। परिणामत: वह उपयोगिता के बजाय आकर्षण के अधीन खरीदता है। वस्तु खरीद लेने पर भी नई इच्छाएँ पैदा होती रहती हैं; इसलिए उसकी अतृप्ति समाप्त नहीं होती।

चरण 3: बचने का उपाय लेखक का उपाय है कि मन खाली लेकर बाज़ार न जाएँ। पहले निश्चित करें कि वास्तव में किस वस्तु की जरूरत है और फिर उतना ही खरीदें। यहाँ भरा मन स्पष्ट उद्देश्य, संतोष और आत्मसंयम का संकेत है। आवश्यकता का ज्ञान रखने वाला व्यक्ति वस्तुओं की सजावट से विचलित नहीं होता। इस प्रकार बाज़ार का उपयोग जरूरत पूरी करने के लिए करने पर उसका जादू निष्प्रभावी हो जाता है।

चरण 4: निष्कर्ष बाज़ार का जादू चमक-दमक से उत्पन्न अनावश्यक खरीद का मोह है। उससे बचने के लिए जरूरत पहचानकर, संतोष और स्पष्ट उद्देश्य के साथ बाज़ार जाना चाहिए।

त्वरित सुझाव: जादू की परिभाषा के बाद खाली मन का अर्थ और जरूरत पहचानने का उपाय लिखें।

12(ग). डॉ. आम्बेडकर के मतानुसार दासता की व्यापक परिभाषा की चर्चा कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दासता केवल कानूनी गुलामी नहीं, व्यक्ति की इच्छा और कर्म पर दूसरों का नियंत्रण भी है।
- स्वतंत्र समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यता तथा रुचि के अनुसार व्यवसाय चुनने का अधिकार मिलना चाहिए।

चरण 1: दासता की प्रचलित और व्यापक धारणा सामान्य अर्थ में दासता उस कानूनी व्यवस्था को कहा जाता है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे की संपत्ति बना दिया जाता है। डॉ. आम्बेडकर इस अर्थ को अधूरा मानते हैं। उनके अनुसार दासता उस सामाजिक अवस्था में भी मौजूद रहती है जिसमें कुछ लोग दूसरों के जीवन और आचरण को नियंत्रित करते हैं। कानूनन स्वतंत्र कहलाने वाला मनुष्य भी ऐसी व्यवस्था में वास्तविक स्वतंत्रता से वंचित रहता है।

चरण 2: जाति और व्यवसाय के संदर्भ में अर्थ यदि समाज किसी व्यक्ति को उसकी रुचि और योग्यता के विपरीत पहले से निर्धारित काम अपनाने के लिए विवश करे, तो वह भी दासता है। जाति-प्रथा जन्म के आधार पर व्यवसाय तय करके इसी प्रकार मनुष्य की स्वतंत्रता छीनती है। व्यक्ति को दूसरे के निर्धारित उद्देश्य के अनुसार जीवन बिताना पड़ता है और अपना कार्यक्षेत्र चुनने का अवसर नहीं मिलता। इस प्रकार सामाजिक दबाव और बाध्यता भी दासता के रूप हैं। स्वतंत्रता तभी सार्थक है जब व्यक्ति को अपने जीवन की दिशा तय करने और आवश्यकतानुसार काम बदलने का वास्तविक अवसर मिले।

चरण 3: निष्कर्ष आम्बेडकर के अनुसार दासता का वास्तविक आधार दूसरों द्वारा जीवन पर नियंत्रण है; इसलिए जन्म से थोपा गया व्यवसाय भी दासता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कानूनी गुलामी के साथ इच्छा के विरुद्ध थोपा गया व्यवसाय अवश्य जोड़ें।

12(घ). शिरीष के वर्णन में कवि ने महात्मा गांधी का उल्लेख क्यों किया है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष की विपरीत मौसम में भी खिलने की क्षमता अनासक्ति और जीवन की दृढ़ता का प्रतीक है।
- गांधी का स्मरण संकट के बीच करुणा, सत्य और लोकमंगल के प्रति उनकी निष्ठा के कारण होता है।

चरण 1: विपरीत परिस्थितियों में अविचलता शिरीष भीषण गर्मी, लू और प्रतिकूल वातावरण में भी सरस फूलों से भरा रहता है। वह बाहरी कठिनाइयों से पराजित होकर अपनी सहजता और जीवन-शक्ति नहीं खोता। लेखक को उसमें एक ऐसे अनासक्त साधक का रूप दिखाई देता है जो कठिन परिस्थितियों के बीच भी अपना धर्म निभाता रहता है। शिरीष की यह विशेषता महात्मा गांधी की याद दिलाती है।

चरण 2: गांधी के आचरण से संबंध देश में सांप्रदायिक हिंसा, घृणा और राजनीतिक उथल-पुथल के बीच गांधी प्रेम, अहिंसा और मानवता के आदर्शों पर दृढ़ रहे। उन्होंने संकटों में भी लोगों का दुःख दूर करने और सद्भाव जगाने का प्रयत्न किया। जैसे शिरीष झुलसते वातावरण में भी सरसता बाँटता है, वैसे ही गांधी वैमनस्य के बीच आशा और शांति का संदेश देते रहे। दोनों में अनासक्ति, धैर्य और प्रतिकूलता में भी कल्याणकारी बने रहने की समानता है। यह तुलना केवल बाहरी सहनशीलता की नहीं है; इसमें अपने परिवेश को मानवीय और सुंदर बनाने का सक्रिय प्रयास भी निहित है। इसी कारण गांधी का स्मरण निबंध के जीवन-संदेश को अधिक स्पष्ट और प्रभावशाली बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष गांधी का उल्लेख शिरीष की अनासक्त दृढ़ता और संकट के बीच सरसता बनाए रखने की विशेषता स्पष्ट करने के लिए हुआ है।

त्वरित सुझाव: शिरीष की गर्मी में सरसता का संबंध गांधी की हिंसा के बीच अहिंसक निष्ठा से स्थापित करें।

12(ङ). सफ़िया नियम-विरुद्ध काम कर रही थी, पाक और भारत दोनों के कस्टम अधिकारियों ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया और क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में नमक स्मृति, मातृभूमि और बँटे हुए लोगों के आत्मीय संबंधों का प्रतीक है।
- दोनों कस्टम अधिकारियों की प्रतिक्रिया राजनीतिक सीमाओं के पार मौजूद मानवीय लगाव को व्यक्त करती है।

चरण 1: पाकिस्तानी अधिकारी का व्यवहार पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी ने सफ़िया की बात सुनकर उसे अपराधी मानकर कठोर व्यवहार नहीं किया। जब उसे पता चला कि नमक लाहौर को अपना वतन मानने वाली सिख बीबी के लिए है, तो वह उनकी भावना समझ गया। वह स्वयं देहली से जुड़ी स्मृतियाँ सँजोए था और उसे अपना वतन मानता था। इसलिए उसने नमक ले जाने में सहानुभूतिपूर्वक सहायता की और सिख बीबी के नाम प्रेम तथा अपनत्व का संदेश दिया।

चरण 2: भारतीय अधिकारी का व्यवहार और कारण भारतीय कस्टम अधिकारी ने भी सफ़िया के उद्देश्य को समझकर उसके साथ आत्मीय व्यवहार किया और नमक ले जाने दिया। उसके मन में ढाका की स्मृतियाँ थीं; राजनीतिक विभाजन के बाद भी वह उसे अपना वतन मानता था। दोनों अधिकारियों ने अनुभव किया कि किसी स्थान से मनुष्य का भावनात्मक संबंध सीमा बदल जाने से समाप्त नहीं होता। सफ़िया के काम में निजी लाभ या व्यापार का उद्देश्य नहीं, एक विस्थापित स्त्री की स्मृति और प्रेम की रक्षा थी। इसी मानवीय संवेदना ने उनकी प्रतिक्रिया को उदार बनाया।

चरण 3: निष्कर्ष दोनों अधिकारियों ने नियम की कठोरता के स्थान पर सफ़िया की भावना को समझा, क्योंकि वे स्वयं बिछुड़े हुए वतन की पीड़ा और लगाव से परिचित थे।

त्वरित सुझाव: दोनों अधिकारियों के अपने वतन याद रखें: पाकिस्तानी का देहली और भारतीय का ढाका।

13. 'डायरी के पन्ने' में ऐन फ्रेंक ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर जो विचार व्यक्त किए हैं, उनका विवेचन जीवन-मूल्यों की दृष्टि से कीजिए । आज उन मूल्यों और परिस्थितियों में कितना परिवर्तन आ सका है ? विस्तार से समझाइए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रेंक स्त्रियों के योगदान के समुचित सम्मान और पुरुषों के समान अधिकार की समर्थक हैं।
- सामाजिक प्रगति का मूल्यांकन शिक्षा, स्वायत्तता, सम्मान और अवसर की वास्तविक समानता से करना चाहिए।

चरण 1: ऐन की सामाजिक आलोचना ऐन फ्रेंक प्रश्न उठाती हैं कि पुरुष प्रधान समाज ने स्त्रियों को पुरुषों से कम महत्त्व क्यों दिया। स्त्रियाँ परिवार और समाज के निर्माण में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, फिर भी उन्हें अपेक्षित सम्मान नहीं मिलता। शारीरिक बल अथवा परंपरा के आधार पर पुरुष की श्रेष्ठता स्वीकार करना न्यायसंगत नहीं है। ऐन चाहती हैं कि स्त्रियों के श्रम, क्षमताओं और स्वतंत्र व्यक्तित्व को पहचाना जाए तथा उन्हें पुरुषों के बराबर अधिकार प्राप्त हों।

चरण 2: मातृत्व और मानवीय मूल्यों का सम्मान ऐन स्त्री की संतान को जन्म देने की क्षमता और उस प्रक्रिया में उठाए जाने वाले कष्ट को विशेष महत्त्व देती हैं। मानव-समाज की निरंतरता में इस भूमिका को कम करके नहीं आँका जा सकता। उनके विचारों के मूल में समानता, न्याय, संवेदनशीलता और मानवीय गरिमा हैं। स्त्री का सम्मान केवल माँ के रूप में ही सीमित नहीं होना चाहिए; उसके विचारों, निर्णयों और प्रतिभा का भी स्वतंत्र मूल्य है। बराबरी का अर्थ उसके विशिष्ट अनुभवों का आदर करते हुए उसके अवसरों पर लगे अनुचित प्रतिबंध हटाना है।

चरण 3: वर्तमान परिस्थितियों का मूल्यांकन आज स्त्रियों की शिक्षा, रोजगार, संपत्ति के अधिकार और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी के अवसर बढ़े हैं। वे विज्ञान, प्रशासन, खेल, राजनीति और अन्य क्षेत्रों में अपनी क्षमता सिद्ध कर रही हैं। इससे ऐन की समानता की आकांक्षा को पहले की अपेक्षा अधिक सामाजिक स्वीकृति मिली है। फिर भी घरेलू काम का असमान बोझ, लड़का-लड़की में भेदभाव, हिंसा, असुरक्षा और निर्णय लेने की स्वतंत्रता पर अंकुश जैसी समस्याएँ बनी हुई हैं। इसलिए परिवर्तन को पूर्ण नहीं कहा जा सकता। कानून के साथ परिवार की सोच और दैनिक व्यवहार बदलना भी आवश्यक है, ताकि समान सम्मान केवल आदर्श न रहकर जीवन का अनुभव बन सके।

चरण 4: निष्कर्ष ऐन के विचार स्त्री की गरिमा, समान अधिकार और योगदान के सम्मान की माँग करते हैं। आज उल्लेखनीय प्रगति हुई है, पर वास्तविक समानता के लिए सामाजिक मानसिकता और व्यवहार में अभी परिवर्तन आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को ऐन के विचार, उनमें निहित जीवन-मूल्य और आज की उपलब्धियों व शेष समस्याओं के क्रम में लिखें।

14(क). 'जूझ' कहानी के शीर्षक का औचित्य सिद्ध कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक की सार्थकता का अर्थ है कथा के मुख्य भाव तथा नायक के जीवन से उसके संबंध को स्पष्ट करना। 'जूझ' का अर्थ लगातार संघर्ष करना है।
- आनंद यादव के आत्मकथात्मक वृत्तांत में शिक्षा पाने का संघर्ष, प्रतिकूल पारिवारिक परिस्थितियों का सामना और रचनात्मक प्रतिभा का विकास प्रमुख हैं।

चरण 1: शिक्षा के लिए पारिवारिक बाधाओं से संघर्ष 'जूझ' का केंद्रीय पात्र आनंद पढ़ना चाहता है, लेकिन उसके पिता उसे खेती के काम में लगाए रखना चाहते हैं। पिता की दृष्टि में पढ़ाई से अधिक महत्त्व खेत के काम का है। इसके विपरीत आनंद अनुभव करता है कि शिक्षा उसके जीवन को बेहतर बना सकती है। स्कूल जाने की इच्छा पूरी करने के लिए उसे केवल आग्रह ही नहीं करना पड़ता, बल्कि अपनी परिस्थितियों के बीच उपाय भी ढूँढ़ना पड़ता है। माँ का सहयोग और दत्ता जी राव की सहायता उसे फिर स्कूल पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण बनती है। इस प्रकार विद्यालय में प्रवेश मिलना भी उसके लिए सहज घटना नहीं, संघर्ष की उपलब्धि है।

चरण 2: श्रम और पढ़ाई के बीच निरंतर प्रयत्न स्कूल जाने की अनुमति मिलने से आनंद की कठिनाइयाँ समाप्त नहीं होतीं। उसे खेत के काम की जिम्मेदारियाँ निभाते हुए पढ़ाई करनी पड़ती है। शारीरिक थकान, समय की कमी और पिता की अपेक्षाओं के बावजूद वह शिक्षा से अपना संबंध बनाए रखता है। स्कूल में फिर से पढ़ाई के वातावरण में ढलना और अपनी स्थिति सुधारना भी उसके प्रयत्न का हिस्सा है। उसकी जिजीविषा बताती है कि संघर्ष किसी एक व्यक्ति के विरोध तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन की अनेक प्रतिकूलताओं से लगातार जूझने की प्रक्रिया है।

चरण 3: रचनात्मक पहचान के लिए संघर्ष सौंदलगेकर मास्टर का कविता पढ़ाने का ढंग आनंद के भीतर छिपी काव्यप्रतिभा को जगाता है। वह कविता को अनुभव करने और स्वयं रचना करने की ओर बढ़ता है। खेत का एकांत और श्रम से भरा जीवन भी उसके लिए कविता की साधना का अवसर बनने लगता है। इस प्रकार वह अभावों के बीच अपनी संवेदना और प्रतिभा विकसित करता है। शीर्षक उसके बाहरी संघर्ष के साथ भीतर उभरते रचनाकार की साधना को भी व्यक्त करता है।

चरण 4: निष्कर्ष 'जूझ' शीर्षक पूर्णतः सार्थक है, क्योंकि आनंद का जीवन शिक्षा, आत्मविकास और रचनात्मक पहचान के लिए निरंतर संघर्ष की कथा है। यह संक्षिप्त शीर्षक पूरे वृत्तांत की केंद्रीय चेतना को समेटता है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक का अर्थ बताने के बाद पिता का विरोध, खेत के साथ पढ़ाई और काव्यप्रतिभा का विकास जोड़कर उसकी सार्थकता सिद्ध कीजिए।

14(ख). ऐन फ्रेंक और पीटर के आपसी सम्बन्धों पर प्रकाश डालिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'डायरी के पन्ने' में ऐन फ्रेंक के अनुभव युद्ध और यहूदियों के उत्पीड़न के बीच विकसित होते हैं। उसके संबंधों को समझने के लिए किशोर मन की आत्मीयता और स्वतंत्र व्यक्तित्व की आवश्यकता पर ध्यान देना चाहिए।
- पीटर के प्रति ऐन के बदलते भावों में अकेलेपन से मुक्ति, विश्वास, आकर्षण और आत्मपरीक्षण दिखाई देते हैं।

चरण 1: प्रारंभिक दूरी और संबंध का बदलना ऐन और पीटर दोनों को अन्य लोगों के साथ छिपकर रहना पड़ता है। इस सीमित और तनावपूर्ण वातावरण में उनके पास स्वाभाविक किशोर जीवन जीने की स्वतंत्रता नहीं है। प्रारंभ में ऐन पीटर से विशेष प्रभावित नहीं होती और उसे अपना घनिष्ठ साथी नहीं मानती। बाद में बातचीत बढ़ने पर वह उसके व्यक्तित्व के दूसरे पक्षों को पहचानने लगती है। परिचय और एक-दूसरे की भावनाओं को सुनने से उनकी आरंभिक दूरी कम होती है।

चरण 2: अकेलेपन के बीच आत्मीय सहारा ऐन को अपनी भावनाएँ खुलकर कहने और समझे जाने की तीव्र इच्छा है। पीटर के साथ बातचीत में उसे ऐसा साथी मिलने का अनुभव होता है, जिसके सामने वह अपने मन की बात रख सकती है। पीटर भी उसके साथ सहज होने लगता है। दोनों की निकटता में मित्रता के साथ किशोरावस्था का आकर्षण भी जुड़ा है। छिपे हुए जीवन की घुटन और बाहरी दुनिया के भय के बीच उनका साथ सांत्वना देता है। ऐन के लिए यह संबंध केवल समय बिताने का साधन नहीं, भावनात्मक अपनत्व पाने का अवसर बन जाता है।

चरण 3: आकर्षण के साथ विवेक और आत्मनिर्भरता ऐन अपने संबंध को केवल भावावेग में नहीं देखती। वह अपने मन और पीटर की प्रकृति पर विचार भी करती है। उसे अनुभव होता है कि दोनों के व्यक्तित्व में अंतर है और पीटर से निकटता उसके भीतर की सभी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकती। वह अपने विचारों तथा स्वतंत्र व्यक्तित्व का महत्त्व पहचानती है। इसलिए उसके मन में आकर्षण के साथ यह सजगता भी बनी रहती है कि उसे स्वयं अपना मानसिक सहारा बनना होगा। ऐन का यह आत्मपरीक्षण उसके संवेदनशील और परिपक्व होते व्यक्तित्व को सामने लाता है।

चरण 4: निष्कर्ष ऐन फ्रेंक और पीटर का संबंध प्रारंभिक दूरी से आत्मीय मित्रता और किशोर आकर्षण तक विकसित होता है। कठिन जीवन में वे एक-दूसरे का भावनात्मक सहारा बनते हैं, फिर भी ऐन संबंध की सीमाओं को पहचानते हुए अपनी स्वतंत्र पहचान और आत्मनिर्भरता को महत्त्व देती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में संबंध का क्रम दिखाइए—प्रारंभिक दूरी, बातचीत से निकटता, भावनात्मक सहारा और अंत में ऐन का आत्मपरीक्षण।